सुरसती

भोजपुरी तिमाही

(शोध, रचना, संस्कृति आ पुरातत्व प्रधान)

भारतीभिः भारती सजोषा-ऋग्वेद

(सभ छोट-बड़ भसन सँगे भारती भासा सेवे लायक बाड़ी ।।)

प्राननाथ से करीं परथना बन जा आजु सुरसती ।
जइसन सावन आ भादों में जल के धार बरसती ।।

- स्वामी शिवानंद जी 'तीर्थ'

संपादक

डॉ० नन्दकिशोर तिवारी

रोहतास जिला भोजपुरी साहित्य परिषद, सहसराम

मार्च 2006

अनुक्रम

क्र.सं.	विषय	पृ.सं.
1.	**सम्पादकीय**	1–2
	सच्चा सेवक आ सेवकाई के जरूरत	
2.	***विरासत***	3
	गरीबन के नाँव पर – स्व. कुंजन	
3.	***एकांकी***	4–9
	चाचा के चतुराई – ब्रह्मेश्वर नाथ तिवारी	
4.	***बीतल–बिसारल***	10–14
	होलरी हमरा गाँव के – नकिति	
5.	***शोध–लेख***	14–18
	भोजपुरी के नाटक के समाजिक बदलाव में भूमिका – विद्यावती	
6.	***कबिअन के पंचाइत***	19–27
	लिरिक, गजल, नवगीत आदि भानु, अलमस्त, विद्यार्थी, अरुण, अविराम, रोहतासवी, दूबे, ब्रह्मेश्वर नाथ, कुमार विष्णुपुरी, कमल।	
7.	***लघुकथा –***	27–28
	सातिर अपराधी – जय बहादुर सिंह	
8.	***समीक्षा –***	29–32
	गीत लोक – बावला, सुपुली भर तरेगन – सं0 अरुण, कायाकल्प– किरन, सपना के देस – मनमौजी	
9.	***चीठी –***	
	सेवा आ सम्मेलन – नकिति	आवरण 3

सुरसती –तिमाही

सहयता – पनरह रोपेआ

मारिच – 2006

संपादक

डॉ. नन्द किशोर तिवारी

सहायक

चन्द्रशेखर

रोहतास जिला भोजपुरी परिषद के मुख–पत्र

निराला साहित्य मंदिर,

बिजली शहीद, सहसराम, रोहतास (बिहार)

www.bhojpurisahityangan.com

सम्पादकीय

भोजपुरी खातिर सच्चा सेवक आ सेवकाई के जरूरत

अपना देस अइसन भासा आ साहित्य के भंडार कतहीं ना मिली, कवनो देस में ना। महादेस अइसन देस, संसकिरित अइसन भासा आ पूरा देस में फइलल सैकड़न भासा में अदिमी के सोच के खजाना। हिन्दी ओकर पूरा उपजोग कइलस आ समुद्दर बन गइल। सभ भासा ओकर सहायता कइली स। ओकरा से कुछ पवलीं स, कुछ देलीं स। ईहे लेन-देन संसार ह, भासा भी आदान-प्रदान ह। अदिमी बिना बतिअवले ना रहि सके। कुछ सुनेला तब बोलेला। साहित्य में एकरा के संप्रेषण कहल जाला। राउर बात कतना अदिमी के भीतर जा के ऐगो दोसर बात के सोता फोरत बा, जगावत बा। सभे सुनेला कहेला, पढ़ेला भले दोसरा भासा के चीझ लेकिन भीतर से ऊ अपने भासा में सोचेला। खेत में घासो जामेला त अपना-अपना ओर के अलगा-अलगा घास होला। अगर यू. पी. के गेहूँ के बीआ आई त ओकरा संगे ओहिजा के घासो के बीआ आके जामी जवन बिहार के घास से अलगे होई। अइसहीं मातृभासा में जवन विचार फूटेला ऊहे विविध भासा में परगट होत चलेला। जइसे बर में बरोह ओइसहीं विचार में प्ररोह। बरोहिए जमीन में लटकि के एगो बर के फेंड़ हो जाला, ओइसहीं कवनो भाव-विचार भासा में प्ररोहित होके दोसरा भासा खातिर चुनौती बने लागेला।

भासा के समृद्धि सेवा, साधना आउर सम्मिलन से होला, खाली सम्मेलन से ना। एकरा मूल में प्रेम प्राणतत्व ह। जीवन प्रेम से परगटे भइल बा। अथाह, असीम ओकर सरूप बा। ई प्रेम एकबग्गा होला। मियाँ के ढरकी अस, जल के सोता अस। जेने जगह मिलल ढरक गइल। कवि आ साहित्यकार भी समाज के एगो रूप देबे खातिर कवनो भावना में बहिजालन। बिना बहले भाव परगट होके साधन-धाम ना बन सके। ओह में रात के दिन आ दिन के रात बनावे के परेला। ई सेवा बिना प्रेम के होइए ना सके। रवा जवना चीझ से प्रेम करब ओकरे सेवा करब। रामजी के प्रति प्रेम हनुमान लछुमन, भरथ के परगट कर देलस। हिन्दी के प्रति प्रेम महावीर प्रसाद द्विवेदी, गुप्त जी, निराला जी, पन्त, महादेवी जी के उत्पन्न कर देलस। ई लोग के भगवान सभ भौतिक सुख के चिन्हा तक छीन लेलन। सुरसती जी जीभ आ कलम दूनो पर जा के बसि गइली। हो गइल हिन्दी के कल्यान। कालीदास जी शारदा जी के अतने मँगबे कइलन। तूँ बस हमार हो जा। एगो भासा के ऊँचाई के माप कालीदास बन गइलन। ओइसहीं आचार्य नलिन विलोचन जी कहलीं कि हिन्दी के राष्ट्रभासा होखे के चाही, काहें कि निरालाजी अइसन कवि एह में लिखत बाड़न। अब एहिजा परधान भइल व्यक्ति, कवनो प्रकासन संस्था ना, कवनो

www.bhojpurisahityangan.com

सम्मेलन ना। एगो सेवक, एगो साधक, एगो अपना भासा से, साहित्य से प्रेम करे वाला। जे दीहल से आपन सभ, दे देलस तक अब हिमालय पर चढ़त रहीं, नावँ करत रहीं। ई सभ लोग भासा से प्रेम कइलस आ ओकर रस गारि के अपना भासा-साहित्य में परोसलस। जइसे राम-राज आजो ले हनुमान जी के सेवकाई पर टिकल बा ओइसहीं मैथिली विद्यापति पर अवधी के साहित्य तुलसी जायसी पर, ब्रजी सूरदास आदि पर आ हिन्दी अनेक मनस्वी कवि उपन्यासकार आदि लोग पर ।

भोजपुरी में हाला जादा बा काम कम। सम्मेलन कइके कोई अध्यक्ष बन जाता त कोई प्रधान मंत्री। फूलल रहत बा, बस हमहीं भासा साहित्य दूनो हईं। हमरे से कुल्ही विधा के विकास भइल आ हमहीं भासा हईं। हम हमार के बीच एह भासा के सकदम भइल बा। नावँ धरा गइल अखिल भारतीय। एहसे कम सोचल ना जा सके आउर बन गइलन स्वयंभू-शंभू। राजनीति के राजधानी साहित्य के रजधानी में परगट हो गइल। हर समाज में कुछ पारा लोग होइबे करे ला। ऊ साहित्य के पोसल पाड़ा लोग होला। स्रोता के भी सुद्ध होखे के चाही आउर पाठक के भी। भोजपुरी के कबो सेवक ना मिललन। सेवकाई बिना कवनो माई छछनत रहेले। जे सेवक के ठाट में आइल ऊ बेलकुल बैपारी रहे। आपन काम निकाले वाला। आपन गोटी बइठाए वाला। आपन राज चलाए वाला। जइसे कवनो जय परकास के भीतर से कवनो लाल निकलि के लालू बन जास। भोजपुरी खातिर त 'लाल देहं लाली लसे अरूधर लाल लंगूर' के जरूरत बा जे लंका में जाके अपना मालिक के लोहा मनवा ले। राजनीतिग्यन के आँख में पानी ना होखे ऊ लोग कानी आँख से सभ चीझ के देखेला। लड़ा-भिड़ा के आपन काम चलावेला। सेवक गादी ना चाहे बस नादी भर, पेटभर, अनाज चाहे ला। ऊ काम करेला ऊ अपना राम के चाहे ला नाम ना चाहे। भोजपुरियन के अइँठ, मसहूर ह। एह से साहित्य अलगा रहल चाहेला। एहिजा जोम के मोम बना के काम लिआला। भाई ना त दाई हिअ अउर न मेहरारू। ऊ सुद्ध माई हिअ। ऊ सुद्ध प्रेम, सेवा के अपना हृदया के तराजू पर तउलत रहेले। ओकरा के माली-मालिन चाही ओकरे घरे से मँगा के पानी पीही, पूरा परिवार के अन-धन से भर दीही। ओकरा खोज सेवका के होला। ओकर हिंडोला नीभ के डाढ़ में लागेला। माली अइसन साहित्य के सेवक होलन। उनुके हाथ से माई (भोजपुरी माई) पानी पी के तिरपत होइहें। एह पुरबी भासा भोजपुरी के सेवकन के जरूरत बा । शिव जी निअन सातू पी के लिखे वाला। जहर खा के इमरित बाँटे वाला। साहित्य खातिर रात-दिन, सपनों में जीए-मरे वाला। राजनीतिग्यन का जमराजो से ना डरे वाला, आपन बात साफ कहे वाला। मुँह देखिके ना बोले वाला, भासा आ लिपि खातिर अकाट्य तरक देवे वाला आउर आपन जीवन आ साहित्य में कहल जीवन के एक करके ऐनक नीअन साफ झलका देवे वाला।

● ●

www.bhojpurisahityangan.com

गरीबन के नाँव पर

स्व. कुंज बिहारी प्रसाद 'कुंजन''

अदिमी के दिल मोम हो गइल बा। गील चाहे कड़ा होत देर नइखे लागत, अबहीं हँस हँस के दोस्त संगे प्यार प्रेम के बात बतियावत बा, ओही घरी नोकर चाहे लइका पर तड़ाक् दे चटकनो चला देता। तबो कुल मिला के अदिमी प्रेमी जरूर हो गइल बा। रउरा अपना गाँव, महल्ला में एकिनार से पूछ के देखीं। सभ केहू के मन में प्यार बा। सभे केकरो से ना केकरो से मुहब्बत जरूरे करत बा। कवनो कवियन के कवित गीत में देखीं- ऊ बेचारा प्यार कइलस, आ दुनियाँ ओकरा के प्यार ना देलस। बेचारा के दिल टुकड़ा-टुकड़ा हो गइल बा। करेजा झांझर हो गइल बा। ई ओकरा से प्रेम माँगता, ऊ एकरा से प्रेम माँगता। सभे माँगते बा, के जाने दाता के बा ? देश के साठो करोड़ बेचारे मुहब्बत में हाय हाय करताड़े, बाकी भूखे नइखन। भर ढींढ़ खा के ढेंकारत चलत बाड़न, आ विरह के गीत गावतड़न।

खैर, प्रेम मांगल त ठीके बा। एके काम देश में खराब हो रहल बा। जवना बैमानी चोरी चाहे अपराध पर ई धरती टिकल बा तवने के कुछ लोग जर कोड़े पर लागल बा। ई बात त सोझे बुझात बा कि देश से जब चोरिये खतम हो जाई त अलीगढ़ के फैक्टरी में ताला के जगहा का जपे खातिर माला बनी ? ताला, चाभी, बनावे में आ बेंचे में हजारों लाखों अदिमी लागल बाड़े, ऊ लोगवा का खाई ? चोरी से बचावे खातिर बैंक बनल बा, लाकर बनल बा, ई कुल बढ़ई, लोहार कर्मचारी आ मनेजर का खइहें ?

अपराध खतम हो जाई त ई गाँव-गाँव में जवन पिस्तउल बनावे वाला लोग बा ऊ सब बेरोजगार त होइये जइहें, देश के लाखों दरोगा, सिपाही, चउकीदार का करीहें ? हतना एस. पी., डी. एस. पी., आई. जी. बेचारे भूखे मरे लगिहें। आ बैमानिये करावल जेकर जियँका बा उ लाखो वकील, बलीस्टर बेचारे कहाँ जाई ? कचहरी में बइठल हाकिम लोग बइठल का बिरहा गइहें ?

तसहीं देश से गरीबी चल जाई त आउर लोगवा का खाई ? गरीबी चल जाई त कवि आ फोटोग्राफर बेचारे जहन्नुम में चल जइहें। गरीबन के सतावे के चरचा छापल बन्द हो जाई त अखबार कइसे चली ? लाखो रोपेया खर्च कर के फिलिम बनावल जाता गरीबने के ऊपर। जमीन पर जमींदार होखस चाहे ना होखस फिल्मन में जमींदार के अभिनय जरूर करावल जाई। गरीबन के जीत देखावल जाई। तबे नू गरीब अदिमी सिनेमा में धनी होखे जाई। गरीबी ना रही त फिलिम वाला बेचारा लखपति का खाई ?

एही से भगवान गरीबन के नावें, गरीबी दमामी बन्दोबस्ती में लिख गइलन कि गरीबी ना रही त सिनेमा, अखबार कइसे चली, नेता गिरी भा सरकार कइसे चली ? मोट बात, ई संसार कइसे चली ?

-गढ़नोखा, रोहतास

www.bhojpurisahityangan.com

चाचा के चतुराई

(प्रहसन) ब्रह्मेश्वर नाथ तिवारी

पात्र–परिचय

1. दरबारी – एगो अधेड़ ग्रामीण
2. चतुरी लाल – गाँव के पटवारी
3. घरघूमन – गाँव के मनसोख दलाल
4. बटेकृष्ण – हाई स्कूल के अध्यापक
5. नकछेदी – गाँव के चौकीदार
6. जगराखन – दरबारी के भतीजा

पहिला दृश्य

(दरबारी पगड़ी बन्हले, हाथ में बकुली लेके, पनही पहिरले कही जाये के तइयारी में बाड़े। ओही समय चतुरी लाल से भेंट हो जात बा।)

चतुरीलाल – दरबारी काका ! ई रामे राम के बेरा पगड़ी बन्हले, बकुली लेले काहाँ चल देलऽ ?

दरबारी – काल्ह से हमरा मनराखन के इम्तिहान नू होखे बाला बा। सोचत बानीं तनी माहतर लोगन से भेंट कर लिहीं। पीछे कुछ गड़बड़ हो जाई त भारी मोह होखी ।

चतुरीलाल– बाकी कुछ नया बात ना सुनलऽह चाचा! एह साल ऊपर से बहुत कड़ाई बा। मलेटरी सभ के पहरा पड़ी। 100 गज के दूरी तक केहू ना जाई। एक सव चउलास धारा लागू बा।

दरबारी – ई बात केतना हाली सुनल जाला। अबहीं पछिला साल जगराखन के इम्तिहान में गइल रहीं। बटेकिसुन माहटर जवन चिट देस, खिड़की के राह से जगराखन के थमा दिहीं। बचवा फस्स डबिजन से पास हो गइल। आज कवलेज में पढ़ता। ओकर बिआह खातिर अगुअन के धक्का लागल बा। बिना मँगले तीस हजार मिलत बा बाकिर चालीस के मँगाहट बा। कवनो अकुतई बा ?

चतुरी – ठीके बा, बाकी एह साल ई सभ बाजा ना बाजी चाचा! कवनो मास्टर कुछुओ ना करिहें । उनकर नोकरी चल जाई। बड़का हाकिम लोग अइहें। अपना नोकरी के डर केकरा ना होई ?

www.bhojpurisahityangan.com

दरबारी – (झुँझलाके) एह दरबारी के फाटक कतहूँ ना लागे। आपन राज बा, आपन दोहाई। कवनो जाँघ काँपत बा कि हम घरे बइठ जाईं। दूगो निठोहरा के भतीजा बाड़ेसन। जगराखन के नाव पार लगा देलीं त मनराखनो के लाग जाई। इहे कुछ रोपेया पइसा के बाजार लागी। ओहू में पाँछे ना रहब। (गाँठ के रोपेया देखा के) हई देख, सयगो रोपेया लेले बानीं देवता के पूजा-पाठ चढ़ा देब, सब ठीक हो जाई।

(एही समय घरघूमन आवत बाड़े)

घरघूमन – (समने जाके) का बात ह ए दरबारी चाचा! बड़ा रोपेया देखावत बाड़ऽ जेबासे ?

दरबारी – इहे कहत रहीं कि जब टेंट में रोपेया रहे त भगवानों से भेंट हो जाला। एकर मार त अइसन मजगूत होला कि पहाड़ो के काम फूल अइसन चिक्कन आ हलुक हो जाला। हम कवनो झूठ कहत बानी बचवा!

घरघूमन– ना चाचा! अबहीं जान मार के पुलिस के नोट थमा द, सभ ठीके-ठीक बा। घूस प त जमाना के जाँत चल रहल बा। जेतना चाहऽ जुलूम के जौ पीस के धर द। का कवनो उतजोग के फिकिर में बाड़ऽ जेबासे ?

दरबारी – हँ घरघूमन ! मनराखन के काल्ह से इम्तिहान होई। ऊहे माहटर लगे जात बानीं। हम त एको अच्छर ना पढ़लीं, कुदारी के बेंट प जिनिगी बीत गइल। लरिकन सभ के पढ़ा देब त कुछ काम हो जाई।

घरघूमन – (चापलूसी में) बहुते नीमन सोचत बाड़ऽ चाचा! तबे नू तोहरा घरे एक बोलावे, चालीस धावे के सिलसिता शुरु बा। बिना मँगले एक के दस मिलत बा जेबासे। तू बड़का जोड़ के पंडित हवऽ चाचा! केहू तोहरा से हाथ ना मिला सके, जेबासे।

दरबारी – (बात से खुश होके) अबहीं कहाँ, जब मनराखनो के पास करा देब, तब देखिहऽ (इशारा से) हई चतुरी के चतुराई के का जवाब दिहीं।

चतुरी– (नरमी से) हमरा चतुराई के कवनो जवाब ना चाहीं दरबारी चाचा! हम त रेडियो आ अखबार के खबर बतवलीं ह। हम आपन बात लवटा लेत बानीं। हमरा बात के तकलीफ मत मनिहऽ।

घरघूमन – आखिर माफी माँगे के कबन बात हो गइल चतुरी भाई। का कवनो बेजाँय बात का कह देलऽह जेबासे ?

चतुरी – ना घरघूमन ! इम्तिहान के बात कह देलीं ह। एहसाल कड़ाई बा। गार्जियन के उहँवा जाए के मौका ना मिली। पुलिस के कड़ा पहरा रही।

घरघूमन - ईत कवनो समुझदारी के बात ना भइल। दरबारी चाचा दरबार के देवान, गाँव के सेयान आ सभा के सरदार हवन। चुटकी बजाके काम

www.bhojpurisahityangan.com

बना लेलन। ओह में रोपेया के मार त सभका के बश में कर ले ला जेबासे।

चतुरी – ठीके बा। हमरा से गलती हो गइल। (दरबारी से) चाचा! हम तोहरा से माफी माँगत बानी। जा तू आपन जोगाड़ भिड़ावऽ, हम कुछ ना कहब। (जात बाड़े)

घरघूमन – (चापलूसी में) सुन लेलऽनू चाचा! ई पटवारी का बन गइले, सऊँसे गाँव में गेयान के बात सिखावे लगले। कहीं भला, नाती सिखावे नानी के कि ए नानी, तनी घुसुक-घुसुक के चलऽ जेबासे ।

दरबारी – (खुश होके) खिस्सा में कहल बा कि 'करीं से आपके, माई के नू बापके। ई हमरा से मसखरी करे चलल बाड़न। हम अबहीं बटेकिसुन माहटर इहाँ जात बानी। ऊ लरि का के टिउसन पढ़वले बाड़न कइसे ना सुनिहें ?

घरघूमन – हँ.....हँ.....जरूर सुनिहें। जब इस्कोल में रहे के बा त उनकर चुटिया तोहरा हाथ में हमेशा रही। जइसे चहबऽ उनका से काम बना लेबऽ। हम सभ समझत बानीं जेबासे।

दरबारी – (बात से खुश होके) इहे त सोचत बानीं घरघूमन! का हमरा बात के मरजाद उठ जाई ? ना अइसन कबो ना हो सके।

(दूनों लोग जात बाड़े)

दोसर दृश्य

(मास्टर बटेकृष्ण अपना ओसारा में बइठल बाड़े। दरबारी के देखते आपन कुर्सी छोड़ के उठ जात बाड़े। बाद में दूनो आदमी बइठत बाड़े।)

बटेकृष्ण – प्रणाम दरबारी बाबू ! आइल जाव। आज अतनिए पहर कइसे तकलीफ कइल गइल ह !

दरबारी – इहे मन राखन के इम्तिहान के बारे में कुछ कहे-सुने चल अइलीं ह। आपन दोसर कवन काम होई, मियाँ के दौड़ महजिद तक। रउआ बानीं त कवना बात के तकलीफ होई माहटर साहेब !

बटेकृष्ण – आरे, हम कवनो रउआ से अलग बानी। बाकी एह साल बड़ा सख्ती बा। हमनी का ओही विषय में चिन्तित बानी जा, कइसे का होई।

दरबारी – एहमें का घबराए के बा माहटर साहेब ! घरहीं के चाउर के पंथ परेला। पटना, कलकत्ता के कानून एहिजा कवनो काम दिही ?

बटेकृष्ण – से बात त ठीके बा दरबारी बाबू। बाकी नियम-कानून के पालन त करहीं के पड़ी। ओहू में आफिसर लोग अइहें। का जाने कइसे का होई, कहल ना जा सके।

www.bhojpurisahityangan.com

दरबारी – आफिसर लोग आवत बा त आवे दिहीं। कवनो शरबत बनाके पी का जइहें ? जइसे पहिले भइल रहे ओसहीं के कोरशिश करब। जगराखन निकल गइले, आजले राउर नाँव लेल जात बा। पछिला साल त खरच कम भइल रहे, एह साल त मनराखन में ढेर खरच हो गइल। फारम भरले ऊ अलग, टियूसन पढ़ले ऊ अलग। रउआ बस तइयार रहीं।

बटेकृष्ण – हम त बिलकुल तैयार बानीं। बाकी हमनी के तैयारी में कुछ नइखे। तनिको भूल – चुक हो जाई त नोकरी प आफत आ जाई। हमनी का सरकारी मुलाजिम बानीं जा। हम कवनो झूठ नइखीं कहत।

दरबारी – आरे ई सभ गीदड़ भभकी ह माहटर साहेब। हर साल इहे सुने के मिलेला। का हमनी का इस्कोल बनावे में खरच नइखीं कइले। आज सरकार दू पइसा देबे लागल त सभके मालिक बन गइल। का ओह लोगन के लरिका इम्तिहान में ना बइठिहें। हम सभ जानीला। रउआ रचिको मत घबड़ाईं। हम काल्ह जूटब नू ? भीतर के सभ देखत रहब, बाहर के हमरा प छोड़ देब। हम सभ ठीक कर लेब।

बटेकृष्ण – (मजबूरी में) ठीक बा, अब ओहिजे देखल जाई। अबहीं कुछ ना कहल जा सके। अइसे हम राउर मदद करे खातिर कब तइयार ना रहीं।

दरबारी – बस, बस अतने के जरूरत बा। हम सभ ठीक कर लेब। खिस्सा में कहल बा कि 'ए बकुला का लवलऽ डीठ, केतना जाल घसीटलीं पीठ', (जाते समय) ई दरबारी उड़ल चिरई के पाँख में हरदी लगा दिहें। (जात बाड़े)

तीसर दृश्य

(जगराखन के दुअरा पर नकछेदी पहुँच के पुकारत बाड़े। जगराखन घर ही में बाड़े।)

नकछेदी – एऽ बबुआ जगराखन ! आरे घरे बाड़ऽ हो ?

जगराखन – (भीतर से) के आदमी ह, आवत बानीं (घर से निकल के) के ह, नकछेदी भाई। का बात बा ?

नकछेदी – (उदास स्वर में) का बताईं ए बबुआ ! तोहार मनराखन बचवा इम्तिहान से निकाल देल गइले अब ऊ इम्तिहान ना दे सकिहें।

जगराखन – ई के कहत बा ? तू ई कइसे जनल ऽह ।

www.bhojpurisahityangan.com

नकछेदी – हमार पहरा ओहिजे बा । सभ इलाका के चौकीदार आ पुलिस के डियूटी बँटल बा। चिट से लिखत रहन, बचवा पकड़ा गइलन।

जगराखन – (अचरज से) पकड़ा गइलन ? आ – हमार चाचा कहाँ बाड़न। उनका रहते मनराखन पकड़ा कइसे गइलन ?

नकछेदी – अतने नइखे भइल बबुआ ! गजब के अन्हेर हो गइल ।

जगराखन – आउर का भइल बा ? तू साफ–साफ बताव, कइसन अन्हेर हो गइल ?

नकछेदी – कुछ कहेवाला होखे तब नू कहीं बबुआ ! खानदान में दागी लाग गइल। बड़का मालिक बन्हाके जेहल में चल गइले।

जगराखन – (घबरा के) चाचा जेहल में चल गइले ? ई सभ कइसे भइल ह नकछेदी ! उनकरा के के जेहल में भेजल ह ? हमरा कुछ बुझात नइखे।

नकछेदी – केहू कुछ ना कहल – करावल ह बबुआ! मालिक चिट देबे खातिर मनराखन बचवा के खिड़की प गइल रहीं, ओही समय में एगो आफिसर देख लेले ह। पुलिस बुलाके हथकड़ी लगवा देले ह। (घबराहट) जल्दी से जा बबुआ ! मालिक कहलीं ह कि हमरा मिरजई के बगली में पाँच सव रोपेया बा, जमानत खातिर बबुआ जगराखन जल्दी से लेके आ जास । (एही समय चतुरी लाल आवत बाड़े)

चतुरी – का बात ह नकछेदी ! तू एहिजा का करत बाड़ऽ ? जगराखन ! तू अतना उदास काहे बाड़ऽ बबुआ !

जगराखन – (रोकरके) का बताईं चतुरी भइया ! हमरा चाचा के पुलिस लेके जेहल चल गइल। अब कवन उपाय करीं, कुछ बुझात नइखे।

चतुरी – (अचरज से) काहे, दरबारी चाचा जेहल में काहें चल गइले ? नकछेदी! तू कुछ जानत बाड़ ऽ, का बात भइल ह ?

नकछेदी – हँ पटवारी जी! मनराखन बचवा के इम्तिहान के चिट देबे खातिर मालिक खिड़की पर गइल रहीं। अतने में पुलिस पकड़ के जेहल में ले गइल।

जगराखन – (घबरा के) चतुरी भइया ! हम रोपेया लेके आवत बानीं। तू एहि ज़े रहऽ; थाना प संगे चले के होई।

चतुरी – (सोच के) हम पहिलहीं सभ कुछ साफ–साफ कह देले रहीं; बाकी चाचा के चतुराई ना छूटल ।

नकछेदी – अतने ना भइल पटवारी जी! मनराखन बचवा भी इम्तिहान से निकाल देल गइले। आम के बिरीछ तर बइठ के भोंकर–भोंकर के रोवत बाड़े।

www.bhojpurisahityangan.com

चतुरी – खिस्सा में ठीके कहलबा – 'धन-धन गइल आ बुड़बक नाँव परल। मनराखन के इम्तिहान छूटल आ दरबारी चाचा के डाँड़ में रसरी लागल'। एह से कवन फयेदा भइल ! गार्जियन के भला लइकन के चोरी करावे खातिर अतना गलती करे के चाहीं ?

नकछेदी – लरिका सभ त अपने पढ़े में मन नइखे लगावत, ऊपर से मालिक सभे दम दे देत बानीं जा। एक त भाल आ दोसरे हाथ में कुदाल। कइसे पार लागी पटवारीजी ?

चतुरी – नकछेदी ! कहऽत भला, एह पढ़ाई-लिखाई आ चोरी से कवन नफा मिलल। तनी सा दाम बढ़ावे खातिर एतना बड़ बवाल ना बढ़ावे के चाहीं। लरिका के तिलक बढ़ जाय बाकी अकिल आ खानदान के इज्जत प पानी फिर जाय, ई त कवनो समुझदारी ना भइल। दरबारी चाचा के सभ चतुराई खँटाई में पर गइल। हम त बहुत समुझवले रहीं बाकी घरघुमना के कहला में पर के जेहल घूमना बन गइले।

नकछेदी – पटवारी जी ! लरिका के भर जनम कुँआर आ बुरबक भले राख देवे, बाकी ओकरा के कबो जबून काम करेके ना सिखावे के चाहीं। इज्जत के दाम लाख गुना होला। जब ऊहे चल जाई तब का बाँच जाई ? हम त अपना लारिका के कवनो अइसन काम ना सिखाईं जवना के भोग हमरा भोगे के पड़े।

चतुरी – होनी के कबो नास ना होखे नकछेदी ! आज जवन कुछ भइल बा, ओहू में भगवान के मरजी रहे। बाकी इहो निमने भइल कि अइसन भोग से दरबारी चाचा के जिनिगी भर के रोग छूट गइल। अब ऊ अइसन गलती कबो ना करिहें। जे लोग एह घटना के सुनी, ऊहो सँभल जाई। चलऽ जगराखन के बोलावऽ, कवनो उपाय – पतर कइल जाव।

नकछेदी – हँ पटवारी जी ! अबहीं टटका घाव बा, दवाई हो सकेला नाहीं त पीछे मोसकिल हो जाई। चलीं, बबुआ के बोला के थाना पर चलल जाय।

चतुरी – हँ–हँ जल्दी चल......चाचा के सभी चतुराई फेलकर गइल।

(दूनो आदमी अन्दर जात बाड़े)

पटाक्षेप

www.bhojpurisahityangan.com

होलरी : हमरा गाँव के

डॉ. नन्दकिशोर तिवारी

अगर ब्रज के होली के समूचा उतर भारत में नावँ बा त हमनी के लइका पर के होली आ फगुआ भी एगो बहुते बड़ परम्परा के कड़ी रूप में जीअत बा। हमरा होलरी खेलला करीबन पचास बरिस से उपरे हो रहल बा लेकिन ओकर कुल्ही खेला एक दम जीअत तसवीर लेले हमरा मन दिमाग में बइठल बा। एकरा के इयाद कइल ना चाहीं लेकिन ओतने जादा इयाद आवे ला। लागता कि भीतरे बइठ गइल होखे, निकले के नावें नइखे लेत। सोचलीं हँ कि लिखिए के निकाल दीहीं। दोसर चीझ भीतरे जाहीं नइखे देत।

हम लाख चीला के कहीं जे एह घरी से हम ओह घरी बहुते सुखिया रहीं त आज के अदिमी एकरा के झूठ फुसार मानीं, कबो ना बिसवास करी। हमरा ईहाँ होलरी आ फगुआ दू दिन के परब रहे। होलरी पचमी के गड़ा जात रहे। होलरी माने सम्मत गड़ात रहन। ओही घरी से लइकन के चिंता हो जात रहे कि कतना गोइँठा ओह में डला जाव। कतना देरी तक सम्मत (संवत्) जरिहें। हर गाँव के सम्मत बहरे गड़ात रहन। भरसक गाँव के पूरुब मुहें। एक गाँव के सम्मत जरला के हाला होखे त दोसरो गाँव के फुँका जास। हमरा गाँव में बाबूजी अकेला पंडित रहीं। पोथी पतरा के अनुसार गाँव भर के काम होत रहे। अगल बगल के कुछ गावन में समया से पहिलहीं सम्मत जरा दीहल जात रहे। अतना जोर से आग लागे कि दोसरा अगल बगल के गाँव में अँजोर हो जास हरसाल होखे कि अनकी अतना गोइँठा डालल जाव कि जादा देर तक संमत गोसाईं जरस। पाँच गो गोइठा हर घर से डाले के रहे। भिखमंगी के ई अनुभव पहिले पहिल भइला देबे में मेहरारु लोग कंजूसी करे आ एने डालल जरूरी रहे। सम्मत गोसाईं के ई खोराक रहे, ना डलाई त ओने भूखे रहि जइहें। सभकर गोइँठा बधारे में पथात रहे आ गोहरउर ओहिजे लागत रहे। जे ना दे नुकुर-नाकुर करे उनुका से लइका लोग क्षुब्ध होखे चोरावे के दिने में जोजना बनावे लागे। केकर काहाँ गोहरउर (गोइँठा के ढेर) बा कतना ओह में से उठावे के बा, एक अदिमी ओकर जोजना बनावे आउर सभे ओकर पालन करे। कतना बेरी बहुतन के लुंगी भागे में छूट गइल। चदर फाट गइल। गोड़ छिला गइल। लेकिन एह भागे में, खदेराए में, पलान बनावे में, गुप्तगूँ करे में, अपना असफलता में, जतना माजा आइल ओकर इयाद करिए के रोमांच हो जाता। कतना हाली एकरा खातिर गाँव में झगरा होखे के नउबत आ गइल। लेकिन पूरा गाँव के चघोट करिके संमत् में गोइँठा डाले के, ऊहो में, जब सभे सूतल बा कतना बड़का दुस्साहस रहे। लेकिन रोज सवेरे से साँझ तक आपुस में ईहे बाते होखे। सम्मत बाबा अबहिन छोटे लागत बाड़न। आज फलनवाँ के गोइँठा डाल देबे के ई

www.bhojpurisahityangan.com

काहाँ धेआन रहे कि एक-एक चोत बीन के मेहरारू सालभर खातिर जरवना तइआर करत बाड़ी सन। मरद कतहूँ गोबर पाथे ला। इन्हना जुटावे ला। एहो बदे कतना कष्ट होत होई। जब गोहरउर केहू के कटा जाय त हमनी के कतना खुशी होखे आ ओहनी के छनछनाइल गारी देबे के सिवा कवनो उपाय ना रहे। संमत में डालल गोइँठा केहू उठा ना सकत रहे। संमत माने शव। मुरूदघटिया से गोइँठा भला केहू अपना घरे कइसे ले आई। भोजपूरी छेत्र में असगुन सगुन हर घरी अदिमी देखत रहेलन। एह से हर घरी लइकन के देखते औरतन पर किरोध के भूत सवार हो जाय। गारी देवे लागसन। हमरा के बाभन होखे के चलते आ पंडित जी के लइका जान के लोग डाँटस। सभ नान्ह सँगे बड़के लइका होखे नान्ह के काम करत बाड़न। आजो कुछ भउजाई लोग जीअते बा जे कान के अईठ के उठ-बइठ करवले बा ओहसे प्रसन्न होके आपन गोइँठा के कष्ट से मुक्ती पवले बा।

हमनी के आठ नौ दिन त जरूरे संमत बाबा पर गोइँठा के सरधा चढ़ा के हिमालय अइसन ऊँचा बनावे के प्रयास करत रहीं जा। जहिया जरे के रहे ओह दिन हर घर से सवाँग पीछे एगो रेंड़ में बाँधल पुअरा चाहें तिसवट के होलरी ओह में डलात रहे। सभको घर से जब सभ होलरी आ जाय तबे आग लगावल जात रहे। आगो सभे ना लगा सकत रहे। जेकरा कोई ना रहे, ऊहे आग लगावत रहे। अइसे पहिले बाबा जी हूम (होम) करस। आ महदेव भइआ (महादेव तेली) आग लगा देस, समत फुँका जास। लइका आ जवानन के अलगा होरी रहे। ओह में कुछ अदिमी बनइठी बाँधस आ भाँजस। कोई भाँजे खातिर किरासिन के तेल में लूगा के खूब बोर देस आ तार के एक किनारा पर बाँध के पकड़े के मूठ भीरी लकड़ी बाँध देस। ई भाँजे में आसान रहे। एक सिवान से दोसरा सिवान में ले जाके बीग देस। आ ओने से दउरत भाग आवस। दोसरा सीवान में होलरी फेकल असगुन मानल जात रहे। एहसे कबो-कबो दोसरा गाँव से एकरा के लेके झंझट भी हो जात रहे। एहीसे कुछ दूर ले गइला के बाद एगो लइका हाला कर दे कि आ गइलसन रे। बस सभे होलरी बीग के भागे सुरू कर दे आ फिरू संमत् गोसाईं भीरु आदिमी गोल बाँध लेस। लइका लोग के भाग के आवत-आवत में ढोलक झाल आ जात रहे। डाँड़ में ढोलक बँध जाय आ फगुआ सुरू हो जात रहे। कवनो साल संमत् साँझे फुँका जास, कवनो साल सुबहा आ कवनो साल आधा रात के। हर साल ऊ रात लइकन के आपन होत रहे। साँझे फुँकाए वाला साल रात भर गंवनी होखे सुबहा वाला साल में नव-दस बजे दिन तक। संमत् में जब होलरी जाए लागे त दिने में माई सभका देही में 'अबटन' लगा के कुल्ही मइल एक जगहा पर एकाठा करे फिर कटोरी में धरे होलरी के साथे हूमाद करे के घीव अबटन कूल्ही चीझ जाय। ऊ सभ संमत् में डलात रहे। अबटन चाहे उबटन बहुत चीझ डाल के बनत रहे। संमत् बाबा किहाँ से अइला पर सभका आँख में काजर लगावल जात

www.bhojpurisahityangan.com

रहे। तीसी संमत में से जरा के आवे ओकरा के सभे परसाद मानके खात रहे। पाँच गो गोइँठा जरूर सभे ओहदिन ले जात रहे। सालभर संमत् बाबा हमार दिन ठीक राखस सभे ईहे माँगत रहे। लइका सभ बदमासी करस। संमत् गोसाईं गोड़ लागी ला अतने ना कुछ माँगी ला। माँगी ला भीतरे मन में ना राखीं। अब सरीर पुष्ट हो गइल। भोग करे के मन करत बा। अब ऊ जिनिस मिले के चाही एकरा के हाला करके आज सभका से कह देबे के बा। अब ई हाला गावें घर बाप मतारी सभे सुन लेव। लइका सेयान हो गइलन, माने ऊ अब उनका असिरबाद चाहीं कि नइका सम्मत खाली न जाय। एह में विधुर लोग भी आपन अड़ान देखि के भड़ाँस निकाल लेत रहन। लइकन के देखनहरू अगर ई साल ना अइहें त पूरा साल अकारथ बा पूरा साल के मइल आज स्वाहा हो रहलबा। देह के मइल आ मन के मइल। एकाठा मइल पर मन के मइल खतम होइए जाला। पूरा साल के बाहर भीतर के मइल खतम करे खातिर ई सम्मत महराज फुँकास। माने अब कबो ऊ ना मइल आई रहल सहल कुल्ही खतम।

अतना साफ ढंग से कहे के सकती सम्मते गोसाईं दे सकेलन। लइकन के झुंड ओह विधुरन के साथे हो गइल बा। जे मेहरारू मरते कुल्ही लाज सरम घोर के पी गइल बाड़न। अब के उनका के भोगे के जिनिसि परोसे, परोसवावे। कुँआर लइका चाहे बिआहल लइका जिनिकर औरत नैहर गइल बाड़ी, ऊहे साथ दे सकेलन। ई लोग के परथना हाला के साथ बा। ई लोग न भितरे के मन्तर जाने अउरी ना कवनो चीझ छिपावे जाने। हाला करिके आपन भूख माई बाप रूप सम्मत गोसाईं से इझहार करत बा। एह सम्मत के भीतर प्रहलाद जी भी बाड़े आ होलिका जी भी। ई सम्मत ब्रह्म रूप में नर आ नारी, प्रकृति आ पुरुख त्वं स्त्री त्वं पुमान् – दूनो बाड़े। जा रहल बाड़न। अब दोसरा रूप में दोसरा साल अइहें। साल भर तक उनुके असरे मदन बरत रखले रहीं। केहू मेहरारू के खराब नजर से ना देखलीं। केहू से कुछऊ ना मँगनी। तब आज सम्मते गोसाईं से माँगत बानी। ई देबे वाला बाड़े। काल के नियामक आ संचालक त ई बाड़े। इनिकरे खुसे भइला पर त हाड़े हरदी लागी। इनिके असिरबाद से एगो से दूगो होखब। जीवन के सभसे बड़का ईछा पूरा होई। ई सुनी के ? माई-बाप त दहेजे के फेरा में ई साल के ऊ साल करि रहल बाड़न। महादेव जी, हनुमान जी, काली माई, असकामिन माई, बरम्ह बाबा से कहले ना जा सके। अब धन, पूत, मवेसी माँगले ना जा सकेला ना अतना खराब बात। जब माई-बाप से कहले ना जा सके त देवता देवी से कइसे कहा सकेला। एह से सम्मते गोसाईं से कहा सकेला। गोसाईं सबदे में समभाव छिपल बा। गो कहत जाला इन्द्री के ओकर जे रखबार बा ऊ ह ओकर स्वामी। त सम्मते गोसाईं न ओह इन्द्री के बढ़वले। हर साल ऊ अदिमी

www.bhojpurisahityangan.com

बढ़े लागल बढ़त–बढ़त ओकर कुल्ही इन्द्री बढ़े लगली सन। त इन्द्री के स्वामी सम्मत ना भइलन त के भइल। एहसे हर मरत, जरत सम्मत से लइका लोग अपना खातिर जे असिरबाद माँगत रहे ओकर अरथ अब वुझाइल ह। ई भीतर के मइल रहे जेकरा के सम्मत में बीगे के रहे। देही के मइल ऊपर के मइल रहे, मतारी बहिन मिलि के कूल्ही लइका–लइकी के देहे में अवटन लगा के, खटिआ पर मइल झार के, नीचे से उठाके होलरी सँगे सम्मत में जारे खातिर भेजिए देत रहीं।

महदेव भइआ कबो–कबो बाबाजी लोग के हूम करे खातिर इन्तजारी ना करत रहन। अपने हूम करिके आग लगा देस। ओह घरी पुरुव–पटी में राजकुमार बाबा किहाँ एगो पंडित जी रहत रहन। ऊ बड़ा चिड़ना रहन आ रहन एक आँखिके आन्हर। उनुके काम रहे हूमकरे के। उनकर नावँ जगेसर पंडित रहे। धुरेहरी के दिने उनुका के चिड़का के लइका निहाल हो जात रहन। चिड़ावे आ चिड़वावे में हरसू भइआ सभसे आगे रहन। लेकिन अपना से बड़ अदिमी के ऊ बहुत आदर देस, मरजादा के भीतरे रहस। बाप–चचा से बहुते सील राखस। जगेसर पाणे, नजदीके गाँव के रहन। लेकिन ऊ कबो अपना गावें ना जास। लइका लोग जानतो ना रहे कि ई के हवन का करेलन। जब ई देर करके आवस हूम करे खातिर त महदेव चा कहस कि इन्हिका के चिड़ावत काहें नइख जा। जगन चा महरा रहन, उनुकर घर पुरबे किनारे रहे। लइका सम्मत भीरू जाए में गाँव छोड़ते एगो लहरा छोड़सन। हो–हो रे होलरी, फलाना बो के धोकरी। ई धोकरी केहू के कहल जा सकत रहे। जगन बो चाची भीतर से गारी देत निकलस आ लइका फुर्र से चिरई बन जास। चाची गारी देते घर में चल जास।

अब गाँव भर के अदिमी जूट जास। दू चार जो बजवइआ में से केहू एगो के डाँड़ में ढोलक-बन्हा जाय आ पहिले सुमिरन सुरू हो जात रहे। एकरा बाद सभे संमत चगोठ के संकर जी भीरू चलस। ओहिजा भी 'सिव के मन माने बसे कासी' गवाय। दू गो उन्हुके से सम्बन्धित फगुआ। ओकरा आगे बढ़ला पर खाली रसगर फगुआ। सर रर बोल भाई कबीर। गली गली जात रहलीं पवलीं एगो आलू। ओह आलू के देके पवली फलनवाँ भउजी के घालू। जोगी जी सर...र...र...., दोसरका अदिमी कहे कि – 'जोगी जी आउर कह, जोगी जी आउर कह। सचमुचे ई कुल्ही बात जोगिए जी कह सकत बाड़न। जे बेलकुले निस्पृह बा। जेकरा भउजाई से पावे के नइखे मजाक करे के बा। भउजाई कतहूं माई से कम बाड़ी का? लेकिन मजाको कब करब ? एहसे उनुकर नावँ लिहल जरूरी बा। कुल्ही लोक गीतन में नावें त जोड़ा ला। पिंड़िआ में कुल्ही भाई बहिन के नावँ जोरा जाला। अइसन एकर बनावटे बा। ओइसहीं ह जोगीरा एह में कवनो भउजाई के नावँ जोड़ात रहे। जेकर दुआर समने पड़े नावँ जोड़ा जाय। सभके दुआर से होके जावहीं के रहे। फिरू बुढ़वा महादेव जी भीरू अदिमी आ जास। ओहिजा से गवनई खतम होखे त ऊतर करे सिवजी

www.bhojpurisahityangan.com

कीहाँ अदिमी गवते आ जास। ओकरा बाद अंत में राजकुमार बाबा के दलानी पर जा के जवहिरी माई भीरू गा के गवनई खतम हो जाय। दोसरा दिना अदिमी सुबहे से उठके बछरू के नहवा धोआ के अपने कीचड़ खेले सुरू कर देस। हमरा के बाबूजी काम देके जात रहीं। सभका किहाँ हूम करिके अपनो किहाँ कर दीहऽ। भीतर से उनुकर कहल आछा ना लागत रहे लेकिन हूम त करहीं के रहे। एक हेंड़ा गरू रहन। सभका के धोआवे के रहे। सींघ में तेल लगवावे के रहे। भाग जा सन त छेंकवावे के रहे। एह में फगुआ खेले के रहे माई सुबहे कूल्ही चीझ खाए के बना देत रहे। बाबूजी के सराय जाए के रहे हूम करे। कब मोका लागी खाए के। हमरो के बिना नहइले खाए के उपदेस हो जात रहे। खाते खूनी बाबूजी कुल्ही काम के जिमेवारी दे देत रहन। केकरा से कहस। एगो लइका 'पीर बबर्ची भिस्ती खर' सभ ओकरे बने के रहे। खात-खात कूल्ही काम एके साथे सउँप देस। हमरा खाली फगुआ के फिकिर, दोस्तन सँगे मजाक लउकत रहे। एह भाव में उनुकर कुल्ही काम के फिकिर हमरा के लइका से सेआन बना देत रहे। भीतरे खीसो बरे लेकिन कहीं कइसे कि आज हमरा से कूछो ना होई। बाबूजी ताड़ जास, कहस कि तोहरा कुछऊ करे के नइखे, खाली करावे के बा। साथे नहर पर चल जइह, बैल गाइन के छेकले रहिह। एगो, एगो करके सभन के नोकर बनिहार धो डलिह सन। दूनो अदिमी साथे खा लीहीं जा। ऊ घोड़ी चाहें सैकिल ले के चलि जास आ हम एहिजा के हूम, गरू बछरू सभकर जीमा लेके रह जाईं। ई हमरो आछा ना लागत रहे आ अदिमी जन के भी। ओहनी के डर से आ आछा भोजन करे खातिर काम करत रह सन आ हम खाली बाबूजी के डरे। दूनो में ईहे फरक रहे।

ई गरू बछरू के सेवा सभका जीमे रहे एहसे धोअला के बादे रंग कीचड़ होत रहे। हमनी के माई से पइसा लेके भगेलू चा के दोकान में जाईं जा आ चार-पाँच गो पुड़िया रंग के ले के चलि आईजा। एही में कूल्ही भाई-बहिन। राम अधेस बाबा चाहे गाँव के दोसर नोकरिहा लोगन के पास पइसा खूब रहत रहे। ऊ लोग थोक में पाव भर आधा सेर रंग ले आवस। ऊ जादा घोरइला पर सेआर होत रहे। एहसे हमनी के रंग के कतनो पुड़िया आवे दरिदरे रहत रहीं जा। ऊ लोग बालटा के बाल्टा, पीतर के पुचकारी के रखिके रंग खेलस। ऊ लोग रोपेआ लेके आवस आ खूब खाए पीए में लगावस।

भोजपुरी नाटक के सामाजिक बदलाव में भूमिका

डॉ. विद्यावती तिवारी

काव्य के दूनो भेद श्रव्य आउर दृश्य के नाटक मूल रूप में चरितार्थ करे वाला अकेला विधा ह। अइसे साहित्य मनुष्य द्वारा रचल गइल एगो अइसन विचार कोश ह, अइसन संगोरल धन ह, जेकरा के हर अदिमी, हर देश काल में पढ़ सुन के अपना जीवन के बढ़िया बनावे खातिर उपजोग कबहूँ कर सकेला। कुल्ही संस्कृति साहित्य के माध्यम से संचित रहेला। नाटक अदिमी द्वारा अदिमी के रूचि के परिष्कृत करे वाला सभसे सशक्त विधा ह। नाटक शब्द के उत्पत्ति में एकर प्रयोजन भी छिपल बा। 'नट्' धातु से ई नाटक

www.bhojpurisahityangan.com

निकलल बा। 'नट' के माने होला अपना वुद्धि, विद्या के प्रभाव से कवनो अभिव्यक्ति, कवनो बात चाहे कवनो समस्याके रूप में फेर बदल करे के ओकरा अर्थ में आपन मत जोर के उपस्थित कर देव। दोसर शब्दन में कवनो अदिमी के कवनो खास हालत में ओकरा मन के झलक काम-धाम आ बर्त्ताव के नकल नाटक ह। एकर माने कि नाटक ऊ कला ह जवना में पात्र लोग रूप वदलिके, भेख वदलि के देखे वाला के सोझा कवनो समस्या खड़ा कर देस आ ओकर निदान भी प्रस्तुत कर देस। नाटक से सामाजिक वदलाव होखे के बड़ा सरल आ साधारण मौका अदिमी के मिलेला। हमनी के जीवन, भाषा, कला के सीख कुल्ही अनुकरन पर आधारित बा। अदिमी हर कथा में अपना के ढूँढ़ेला। जब नाटककार कवनो व्यक्तिगत आ सामाजिक समस्या के सामने रखेला त ओह में दर्शक अपने गुन-दोस के विवेचन भीतरे-भीतरे करेला। नाटककार मंच लायक ओही तरह के वेश-भूषा बनाके ओह पात्र के सामने लावेला। एह से आदमी अपना भीतर के राक्षस के खड़ा होत देख के ओकरा के मारे के कोशिश करेला। एह से बिचारक लोग एह बात पर एकमत बाड़न कि नाटक के सामाजिक बदलाव में एगो अहम भूमिका बा। एकर रूप विशेष तौर पर जब से फिल्म, रेडियो, नाटक, टी. वी. ले लेले बा तब से सामाजिक जीवन के रहन-सहन, बात-विचार में बहुते बदलाव आइल बा। एह में अच्छाई-बुराई, नीमन जबून दूनों प्रकार के बदलाव बा। गाँधी जी अपना बचपन में राजा हरिश्चन्द्र के नाटक देखले रहीं आउर ओहि घरी से ऊहाँ के सत्य के प्रति आस्था भीतर मन में बइठ गइल। लइका के मन जवान से ज्यादा संवेदनशील होइबे करेला। एह से नाटक के जीवन निर्माण में बहुत बड़ा योगदान बा।

भोजपुरी नाटक के विकास लोक नाटकन के जरिये भइल। पहिले रामायण आ महाभारत के आधार बनाके रामलीला आ रासलीला के मंचन होत रहे। ओकरा बाद नल-दमयन्त, सारंगा - सदा वृक्ष, सीत बसंत, भरथरी चरित, कुंवर विजयी जइसन चरित के भी मंचन प गावल-देखावल जात रहे। एकरा साथे अलग-अलग जातियन के लोक नाटक होत रहे। जइसे गोंड़ लोग के, धोबी लोग के खरिटक आउर मछुवारा लोगन के। लेकिन भोजपुरी नाटक में विदेसिया के आवे के बाद एक विशेष मोड़ आइल एकरा में पहिले के कुल्ही परम्परा एके साथे जुड़ गइल। पहिलका परम्परा में नवाब आ रईसन के दरबारी विदूषकन में बागे गुलनार, दिले बहार, भक्त राजा मोरध्वज जइसन नाटक होत रहे लेकिन इ कुल्ही मनोरंजन के साधन बनिके रह गइल रहे। व्यापक रूप से जनता के साथे ओकर सुख-दुःख से ना जोड़ाइल रहे। भिखारी ठाकुर के 'विदेसिया' के आवते धूम मच गइल। विहार उत्तर प्रदेश आ हावड़ा तक के समेट के विदेसिया आपन रंग सभपर जमवलस। एह में गीत, झूमर, सोहर, खेमटा, जँतसार, कवित्त, सवैया, लोकधुन सभ रूप के साथे गाँव-गवई के समाज भी परगट भइल। एह नाटक में हमनी के समाज में हर तरह के फइलल बेमारी, रूढ़ परम्परा, समस्या, सामाजिक, आर्थिक शोषण के खूब रुचिगर रूप के समावेश भइल। एह नाटक में एह समाज के लोगन के जिनिगी के भीतर के खून, धुन

www.bhojpurisahityangan.com

बनके अपना रस में सभका के डुबा देलस। समाज के जवन समस्या फइलल रहे जइसे – विधवा के समस्या, बेटी बेचवा के समस्या, जवान लइकी के बूढ़ से विआह धन के लालच में भाई–विरोध, अलगवनी के समस्या, बड़–छोट के समस्या, धार्मिकता के हानि एह कुल्ही के आपन विषय बना के विदेसिया शैली भोजपुरी नाटक के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव ले आइल। सारा समाज अपना गलती प सोचे लागल ऊँच विचारन के बीआ हर मानस में अँकुरे लागल। तुलसीदास आ उनकर रामचरित मानस के प्रभाव भिखारी ठाकुर पर जर–मूर से रहे। एह से ऊ उनका आदर्श आउर उनका अध्यात्म के साथे लेके चललन भिखारी ठाकुर के मुख्य लक्ष्य सामाजिक कुरीति आ गलीज के सामने लावे के रहे। उनकर मुख्य स्वर सामाजिक बदलावे के रहे। अपना समय में हिन्दी में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र भी अपना नाटकन से इहे काम कइले रहन चूँकि नाटक दृश्य काव्य ह एह से एह में सभ तरह के ललित कला के समावेश अपने हो जाला। गूढ़ भाव आउर विचार के सरल आउर मनोरंजक बनाके देखनिहार के सामने नाटक परोस देला। मनुष्य जीवन में सभ तरह के खटकत अभाव के पूर्ति करके, ऊ कर्म आउर भावना के प्रेरणा आऊर प्रोत्साहन देके जीवन के रसमय बनावे में महत्वपूर्ण योगदान देला। जइसे भारतेन्दु जी 'अँधेर नगरी' में अविवेकी राजा, चाटुकार मंत्री, जी हुजूर दरबारी, ऊहाँ के निवासियन के कार्य विधि के बरनन कइके धर्म, न्याय आ सत्य के रक्षा के बात कइलन, ओइसहीं भिखारी ठाकुर समाज के भलाई खातिर अपना दसगो नाटकन में ओह दशा के बरनन कइलन। इनकर दस गो नाटक ह – विदेसिया, भाई-विरोध, बेटी वियोग, पुत्र–प्रेम, राधेश्याम बहार, गंगा स्नान, विधवा विलाप, पुत्र वध, गबरघिचोर, ननद–भऊजाई आदि। जेकरा मेंसमाज के रूप ओकर स्थिति आउर ओकर बदला के जरिया समाधान के रूप में कहल गइल बा। साँच बात इहे बा कि कविता मन के विकार दूर करेला। आ नाटक व्यक्ति आ समाज दूनो के भीतर आ बाहर झलका के साफ बनाके साफ ऐनक अस झलका देला, एही से लोग ओह रचना के भरल मन से स्वागत करेला। बनारस के मुकुन्दी भाँड़ हास्यपरक विषय के उठावस धूर्त पाखण्डी पात्रन के नकल करस बाकिर भिखारी ठाकुर जवन आपन नाटकन में जनता के दुःख दर्द आर्थिक समस्या के कारण विदेश गमन भाई–भाई में विरोध, दहेज के मार के चलते बेमेल विआह, ओकर दुखदाई परिणाम विधवा के जिनगी ओकर परवरिश पारिवारिक सम्बन्धन के विखराव आ ओकर विभिन्न रूपन के व्यंग्य परम चुटीला भाषा में अभिव्यक्त कइके जनता के हृदआ बुद्धि दूनों के झकझोर देलन। अतना सफलता कवनो नाटककार के ना मिलल होई जतना सामाजिक बदलाव में भिखारी ठाकुर के नाटकन के मिलल। एह में समाज के कई गो गंभीर रोगन के खुलासा भइल, कुछ सोचे विचारे के बेचैनी जनता में जागल।

www.bhojpurisahityangan.com

एकरा बाद पंडित राहुल सांकृत्यायन के नाटकन के विषय बतावत बा कि सामाजिक बदलाव में एकर कतना बड़ा भूमिका रहे। राहुल जी आठ गो नाटक भोजपुरी में लिखलन, ई साहित्य के अमूल्य निधि बा। एह नाटकन में ऊ समाज राजनीति, अर्थनीति, विदेशी शासन आ देस के आजादी के आपन विषय बनवले बाड़न। नाटकन के नाम ह – मेहरारू के दुर्दशा, नइकी दुनिया, जोंक, ढुनमुन नेता, देस रक्षक, इ हमार लड़ाई ह, जरमनवा के हार निहचय, जपनिया राछस, इहाँ के कुल्ही नाटक समाज आ देस के चिन्ता से सराबोर बाड़न स एह में नया समाज बनावे के गोहार बा एह में विदेसी शासन के हार के कामना कइल गइल बा। एक ओर जात–पाँत के रोग पर 'प्रहार कइल गइल बा, आ दोसरा ओरे ई बतावल बा कि एह पुरान दुनिया से नया दुनिया अच्छा होई। 'जोंक' नाटक में खून चूसे वाला महाजन, उद्योगपति आ पाखण्डी लोगन के भेद खोलल गइल बा फौज के जवानन के त्याग, बलिदान आउर देशभक्ति के बखान इनका नाटकन में बहुतायत से भरल बा। इनकर कुल्ही नाटक 1942 के आस-पास में लिखल गइल रहे जवना में परिवार समाज से लेके देस–विदेस में कुल्ही समस्या के आपन विषय, बनाके लमहर विस्तार एह नाटकन में बा।

आजादी मिलला के बाद भोजपुरी के नाटकन में ऐतिहासिक पुरुखन के जीवन के आदर्श बनाके कुछ नाटक लिखाइल। एकर उद्देश्य भी रहे कि जवना संघर्ष आ त्याग के बल पर आजादी के जोधा देश के भाग्य बदललन उनकर त्याग नौजवानन में वर्तमान रहे। आउर आजादी के दुरपयोग मत होखे। एह में सन्तावन के दूगो जोधा मंगल पाण्डेय आ कुंवर सिंह नाटक के विषय बनले। कुछ नाटककार बड़ छोट के भेद मेटावे खातिर जमींदार के लइकी के शादी पढ़ल लिखल किसान के लइका से करा के एगो सामाजिक जड़ता के तूरे के प्रयास कइलन। विप्र जी के 'मोती के घवद' में एकरा के देखल जा सकेला। गोरखनाथ चौबे के 'उल्टा जमाना', शिवमूरत सिंह की 'नयकी पीढ़ी' परमात्मा पाण्डेय के 'अतियाचार' श्री निवास मिश्र के 'केहू ना हमार' महेन्द्र सिंह के 'बिरजू के विआह' आदि नाटकन में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक समस्या के विषय बनाके दू–तीन दर्जन नाटक लिखाइल। भोजपुरी के जवन एकांकी चाहे रेडियो नाटक लिखइलसन ओकरा में सामाजिक बदलाव के भूमिका विशेष रहल। खेती के समस्या होखे चाहे तिलक दहेज बाल विआह के समस्या होखे चाहें जनसंख्या बढ़े के, नया नया रोगन के समस्या होखे चाहे ओकरा उपचार के। सभका खातिर भोजपुरी नाटक एगो बड़का आश्रय

www.bhojpurisahityangan.com

बनल। पटना रेडियो स्टेशन से प्रसारित ओहघरी के लोहा सिंह नाटक के कुल्ही कड़ी वर्तमान जीवन के समस्या से भरल-पूरल बा। एह में जवन व्यंग्य बा ऊ कुल्ही हमनी के जीवन के विसंगति ह। व्यंग्य खुदे सम-सामयिक जीवन के अनचाहल स्थिति से उत्पन्न होला। जवन हमनी के चाहीला अेकरा मेल में जब हमनी के यथार्थ न होखे तब हमनी के भीतर असंतोष होला, आक्रोश जनमेला आ ओहीसे व्यंग्य के अभिव्यक्ति होला। व्यंग्य आदर्श आउर यथार्थ के टकराहट से फूटेला। इहे राजनीतिक सामाजिक जीवन के चेतना भोजपुरी नाटक में अभिव्यक्त भइल बा। जइसे राजाराम मोहन राय जब सती प्रथा के विरोध कइलन तब ओह घरी के नाटक 'नील देवी' लिखाइल। 'नील देवी' के आचरण से सती प्रथा के विरोध के भाव अउरी गम्भीर भइल। भारतेन्दु जी 'सती-प्रताप' सावित्री के पतिपरायणता के कहानी लिखलीं, एह तरह से हर काल में नाटक सामाजिक बदलाव के भूमिका अदा कइले बा।

भोजपुरी नाटक अपना हर मुद्दा प विचार कइले बा। राहुल जी आ भिखारी ठाकुर के बाद आज के नाटकन में भी जवन 1970 से अब तक लिखाइल बा ओह में आधुनिक दृष्टि आ संवेदना के झलक मिलेला। श्री निवास मिश्र अपना तीनो-चारों नाटक में सामाजिक स्थिति के बहुत सुन्दर चित्रण कइले बाड़न। मानवीय मूल्य में गिरावट त एह नाटकन में लउकबे करेला।

एह बदलत माहौल के भी विद्रूप रूप लउकेला। आजादी का बाद जवन बदलाव आइल ओकरा बाद गँवई जीवन में चोर लम्पट दबंग आ धोखाबाजन के बोलबाला हो गइल। सीधा सादा ईमानदार लोग परेशान आ प्रताड़ित होखे लगलन। भोजपुरी नाटकन में एकर असर स्वाभाविक रहे आउर ओकर पूरा बरनन भी एह में भइल। 'विमलेश' के 'मनवा के साध, दू-भाइअन के बीच प्रेम आ त्याग चित्रित करे वाला नाटक बा। एने सुरेश कांटक के नाटक 'हाथी के दाँत' आउर सूर्य देव पाठक के 'जंजीर' में सामाजिक विषमता आ समानता के जियतार ढंग से उठावे के कोशिश बा। सुरेश कांटक आज के तिकड़मी राजनेतन के असलियत के उघारत पूरा व्यवस्था के अंदरूनी पड़ताल कर रहल बाड़न। एही तरह से भोजपुरी नाटक के साथे रेडियो रूपक, संगीत रूपक, नृत्य नाटिका, प्रहसन आदि खूब विकसित आ समृद्ध हो रहल बा। एह कुल्ही के आकलन कइला पर ई भाव पुष्ट हो जाता कि भोजपुरी नाटकन के सामाजिक बदलाव में बड़ा महत्वपूर्ण भूमिका बा।

(आकाशवाणी से प्रसारित, वार्त्ता) निराला साहित्य मंदिर, सहसराम।

www.bhojpurisahityangan.com

प्रेमचन्द

स्व. भुवनेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव "भानु"

संपत लुटावे घर संपत भरल घर,
धन धनपत राय साहित्त अमर के ।
पियनीके बल पर लेखनी चलत देखि,
मात होइ जात रहे सीयनीं सिंगर के ।।
कलम दोआत रहे बारे के लिखात रहे,
रूबी के ना बात रहे पेन पारकर के ।
भाव देस प्रेम धर्म कर्म के सुग्रंथ 'भानु'
लिखि लिखि भर देले घर विश्व भर के ।।
जबले मुनीसन के महिमा के मान रही,
जबले मनीसन के धाक रही साका के ।
जबले अकास में प्रकाश रही सुरूज के
रास रही जोन्हिन के जोत रही राका के ।।
जब ले बहत धार गंगा–जमुना के रही,
घूमत परिधि रही धरती के चाका के ।
तब ले उपन्यास सम्राट के अमर रही,
दुनिया में नांव 'भानु' 'प्रेमचन्द' काका के ।।

लिरिक — ९३

देव कुमार मिश्र 'अलमस्त'

हमनी के रक्षक तू आवऽ
धन गवादि दऽ आवऽ आवऽ
तुह के हम ओहि भांति बुलावत
जइसे दोहक गो – गोहरावत
प्रिय प्रसन्न मुद्रा में आवऽ
धन गवादि दऽ आवऽ आवऽ
बुध ज्ञानी जन से हम जनलीं

तहरा के खूबे पहचनलीं
महादेव हो आवऽ आवऽ
धन गवादि दऽ आवऽ आवऽ
बैरी निन्दक सकल निकालबि
तुरन्त देस से दूर लखेदबि
रस सोम पायी ईनर आवऽ
धन गवादि दऽ आवऽ आवऽ

लिरिक — ९४

इनर देव तू सत्रु – विनासक
कली छली के हो हो नासक
रहला से आश्रम में तहरा
हो गइल हम ऐश्वर्य साली
किसमते बदल गइल हाली
सत्रु मित्र सब एक गोड़ पर
सत्रु मित्र सब एक मोड़ पर

इनर पाय आश्रय तहार हम
बड़ महान बड़ प्रभाव साली
किसमते बदल गइल हाली
बांह–छाह सिव अस बलधारी
बा तहार आश्रय सुखकारी
नर पुङ्गव, हित सबके प्रेमी
बेजोर बनल प्रतिभासाली
किसमते बदल गइल हाली ।

www.bhojpurisahityangan.com

गजल—१

शिवपूजन लाल 'विद्यार्थी'

उनकर याद भुलाईं कइसे
पत्थर-जिगर बनाईं कइसे
रोंआ-रोंआ उनकर रिनी,
ऊ अहसान चुकाईं कइसे
घोर अन्हरिया बा पिठिअवले
केने कदम बढ़ाईं कइसे
जिनिगी के हर फ्रेम में जड़ल
ऊ तस्वीर हटाईं कइसे
ओठ त सी लेलीं, बाकिर ई
अँखियन के समुझाईं कइसे

हर सूरत में उनकर सूरत
बिंबित बा दिखलाईं कइसे
हर रस्ता में नक्श-कदम के
उनके गइल, मिटाईं कइसे
भरल अंजुमन में सूनापन
के होई भरपाई कइसे
तिनका-तिनका बनिक के बिखरल
सपना के सरियाईं कइसे
कतना गहिरा घाव ऊ दिहलन
मरहम कवन, लगाईं कइसे

गजल — २

पतई डोल रहल ई उनकर आवे के अन्दाज बा ।
मउसम भइल नशीला, एकरा में छीपल कुछ राज बा ।।
चिरई-चिरगुन, कीट-फतिंगन में हलचल बड़ुवे सगरो ।
लागल धरती पर फिर कवनो गीरे वाला गाज बा ।।
बहुत अतहतह कइले बाड़ऽ, मिलिके सजा रही तहरा ।
कुछ अनहोनी होके रही, कुदरत बहुत ना राज बा ।।
आन्ही बनिके ऊठल बड़ुवे आह आजु मजलूमन के ।
अब ना सम्हरी, फेंकऽ झटि से, हीलत सिर के ताज बा ।।
मीठ-मीठ वादन के माया जाल समेटऽ अब आपन ।
कंठ-कंठ से आजु बगावत के उभरत आवाज बा ।।

प्रकाशपुरी, आरा

नवगीत

गंगा प्रसाद 'अरुण'

सतुआ-चटनी आ अमझोरा,
पोंसुआ अइसन दिन ।
बकुला अस टकटकी लगवले,
मछुआ अइसन दिन ।
खर-पतवारी-फूस मड़इया,
घइला, बाग-सरेह ।
गोला-धवरा-कइला बैला
चइला रूप सनेह ।
खुरपी बहिनी संग बतिआवे
हँसुआ अइसन दिन ।
आहर-पोखर सितुहा-घोघा
चिहरल अस ऍड़ी,
उमस-अमहउरी, आमागोटी
खरउरिया, केड़ी।
सून माँग अस डहर अभागिन
बिछुआ अइसन दिन ।
ताड़-खजूरी भोर-दुपहरी
महुआ-माहुर साँझ,
एहवाती-अगसरुआ-उदसल
धरती धनकल-बाँझ।
सँसरे नेक न, पसरल सगरी
कछुआ अइसन दिन ।

www.bhojpurisahityangan.com

एके बात पुछब तोहरा से

शिवशंकर 'अविराम'

एके बात बता द हमके, एके बात पुछब तोहरा से
के मर मर के काम करेला, लह लह घाम में चाम पकावत ?
पनवट कइला खेत में बरधन के पाँछा पाँछा पुचकारत ?
कड़कड़ात बिजली के चमकन, में नयना के नजर गड़ावत ?
आहर पोखर, भरल–तरल–झन्–झन् झिंगुर झँकार बजावत ?
रात–बिरात अन्हार कूच-कूच, सिंग सियार मिलस केकरा से ?
एके बात बता द हमके, एके बात पुछब तोहरा से ।।
लेके थोर चबेना फाँकत, काँपत थर थर भूख मेटावत
दाँत बजावत किट–किट, किट–किट, अगहनवा में बोझ उठावत
खने खेत खरिहान में खन ही, चाल दुलकिया चले सिखावस
रहता में आवत मेहरी के बोझ उठा खरिहान लगावस
केकर लगन बता दे भइया, मेहरी जेकर मिले मेहरा से ।
एके बात बता दे भइया, एके बात पुछब तोहरा से ।।
तूं तऽ तान के चादर सूतऽ, उठऽ तऽ छीलऽ रसगुल्ला
भुलियो के जे खेते पहुँचलऽ, माँगऽ दूध करे के कुल्ला
सोनाचूर के बाते कँऊची, जेकरा टँचून माँड मोहाल
भूखे पेट धँसल पिठिया में, बीसे में ई सूखल गाल
कइसन निकसत आह बता दऽ, देख देख ओकरा भितरा से ।
एके बात बता द हमके, एके बात पुछब तोहरा से ।
साड़ी फाट बनल तनपूरा, धोतियो के भी उहे हवाल
का किनाव धोती कि साड़ी ? कि बेटवन के बुसट सियाव ?
हरहटई से काम फटाफट, तीन सै पैंसठ दिन करे जे
ओकरे बेटवा चिल्ला चिल्ला के, कुपोषण में काहे मरे जे ?
के ह ऊ ? अस्थान बा कँऊची ? पुछीं बतावऽ तूं जेकरेसे ?
एके बात बता द हमके, एके बात पुछब तोहरा से ।।

राजपुर, रोहतास

भोजपुरी भँवर गीत
(एगारह)

आसिफ रोहतासवी

स्याम हमनी के सुधिया में लावेलन कि ना ?
कबो हमनी के बात बतियावेलन कि ना ?
हमनी अनपढ़ के जाती, कइसे पढ़ल जाई पाती,
ऊधो हमनी के रगिआ कढ़ावेलन कि ना ?
उनकर जिगरी इयार, रउवा बानी होसियार,
कबो लोरवे पितमरी भिंजावेलन कि ना ?
एक से एक अलबेली, ओहिजो होइहें सहेली,
ऊधो ! साँच कहऽ, रास उ रचावेलन कि ना ?

www.bhojpurisahityangan.com

अब त मिलल राज-पाट, होई खूब ठाट-बाट
कबो ओठवा से बँसुरी बजावेलन कि ना ?
घुमलें पैदल सउँसे टोला, अब त मीलल उड़नखटोला,
कबो गोकुला के चरचा चलावेलन कि ना ?

बारह

सोझ-सोझ बात कहीं, पारीं जिन जिलेबी, ऊधो बाबा हो,
हमनी के जोग ना बुझाय ।
हमनी गँवार बानी अनपढ़, नदान, ऊधो बाबा हो,
हमनी के जोग ना बुझाय ।
हमनी का जानीजा सगुनवा-निरगुनवा ? ऊधो बाबा हो,
हमनी के जोग ना बुझाय ।
भेजि देले 'जोग', अपने करऽताड़े भोग, ऊधो बाबा हो,
हमनी के जोग ना बुझाय ।
रउए का सिखाइ देलीं-मूँदि लेलें आँख? ऊधो बाबा हो,
हमनी के जोग ना बुझाय ।
मुँदलो प अँखिया में नाचे ऊ सुरतिया, ऊधो बाबा हो,
हमनी के जोग ना बुझाय ।
लाल-लाल ओठवा पर हरियर बँसुरिया, ऊधो बाबा हो,
हमनी के जोग ना बुझाय ।
घुघुर-घुघुर बारि, आँख अमवा के फारि, ऊधो बाबा हो,
हमनी के जोग ना बुझाय ।
भूख आ पियास जाई पीके का बतास ? ऊधो बाबा हो,
हमनी के जोग ना बुझाय ।
हमनी के 'बियोगवे' के कहलऽ का 'जोग' ? ऊधो बाबा हो,
हमनी के जोग ना बुझाय ।
चाहे कतनो 'जोग' बाटे 'आसिफ' राउर 'जोग' ऊधो बाबा हो,
हमनी के 'जोग' ना बुझाय ।

-कुदरा, भभुआ

बिरहा-छंद

ब्रज किशोर दूबे

सँझिया के रधिका रोवेली रोज केवरा कबरेला हियरा में हूक
असरा के खोंतवा जराइ देला संझवत टिसुना हो जाला टुके टूक
झोंकरि-झोंकरि जाला हियरा बिरहवा के लहरेला रातो दिन लूक
तारे खातिर अहिला के राम नाहीं अइले भइल का नेहिया में चूक
चढ़ले चरनियाँ प खोंइछा के फुलवा ना गइले असरवा में सूख
बनि के होरिलवा रोवे रोज सधिया लगले जनमवाँ से भूख
पारल कजरवा तँवाई गइले मेंहदी अनघा सपनवाँ के दूख
कइसन चिचिरी लिलरवा लिखाइल मिले ना उमरिया के सूख

www.bhojpurisahityangan.com

मुक्तक

(1)

साध – सपनन से मन बसावलबा
रूप – धूपा में तन सजावल बा
देर बड़ुए त सिरिफ छुअला के
तारे पोरे – पोरे चढ़ावल बा

(2)

भाग हमरो जगा दीहल केहू
मन के मधुबन बना दीहल केहू
गीत अपने मने गँथा जाता
अइसन लकम लगा दीहल केहू

चैती

छलकेले रस के गगरिया हो रामा
चइत महिनवाँ –
नेहिया के अतर लगावेले मोजरिया
गम–गम गमकेले गँवईं बधरिया
मँह–मँह मन के कियरिया हो रामा, चइत महिनवाँ
कुहुँके कोइलिया त पिहिके पपिहरा
दरकि–दरकि जाला बिरहा के हियरा
सुधिया के चढ़ेले लहरिया हो रामा चइत महिनवाँ –
करेले मधुइया के बरखा चननियाँ
रूप–रस छलकेला सारी रइनियाँ
हुलसेली धरती बहुरिया हो रामा चइत महिनवाँ –
कान्हा के बियोगवा में रधिका झुरइली
सुध–बुध देहिया के दुनिया भुलइली
लोरवा से भींजेले अँचरिया हो रामा चइत महिनवाँ

–भोजपुरी अकादमी, पटना।

भाई–बहिन (कोरस गीत)

ब्रह्मेश्वर नाथ तिवारी

बहिन – सुधि मत बिसरइहऽ बहिना के मोर वीरना,
छाया करत रही अँचरा के कोर वीरना।
भाई – तनिका धीरज धरऽ होखेद अँजोर बहिना,
सुरुज चमकी एकदिन पुरुब के छोर बहिना।
बहिन – हरदम सावन में तू आके, हाथे रखिया बँधा के,
हमरा सरधा के पूजइहऽ, देखऽ बतिया ना भुलइहऽ
प्रेम के दियना बारि करब अँजोर वीरना। छाया.....
भाई – हरदम सावन में हम आइब, तोहसे रखिया बँधाइब,
मन के सरधा सब पुजाइब, दीदी तनिका ना भुलाइब,
पोंछत रहब तोहरा अँखिया के लोर बहिना। सुरूज.....

www.bhojpurisahityangan.com

बहिन – आइल हमनी प भीर, मनवाँ बहुते अधीर,
दुश्मन खींचल चाहे चीर, लेके आवऽशमशीर,
बूड़त लाज बचावऽ नन्द के किशोर वीरना । छाया....

भाई – कवनो सीता ना लुटइहें, रावन चुपके से परइहें,
द्रौपदी बीच सभा में जाके, रोइहें ना केहू आपन पाके,
अइसन चिन्ता छोड़ऽ होखेद भोर बहिना । सुरुज......

बहिन – ममता गोदिया छिनाइल, गइया खूँटवा बंधाइल,
बेटी जनमे के माहुर, फेंकल-बिगल गोबर थाहुर,
तिलक दान-दहेज बा देले झकझोर वीरना । छाया.....

भाई – सब कुछ अपने बन्द हो जाई, तनिका होखे द दवाई,
केतना अँचरा आग लगइहें, खुदे लंका जस जरि जइहें,
नशा टूटी एकदिन बहुत पुरजोर बहिना । सुरुज.....

बहिन – भाषा धरम के लड़ाई, जाति-पाँति के भिड़ाई,
देश के बाँटे के बरिआई, भइया तोहरे से फरिआई,
सुनुगे धधके लागल अगिया के जोर वीरना। छाया.....

भाई – रतिया अचके में कटि जाई, अन्हरिया अपने आप पराई,
देश के फोरे के दवाई, बहुते महँगा अब बुझाई,
लहर उठल बाड़े सीमवा के ओर बहिना । सुरुज......

बहिन – हम हईं भगत के बहिनी, सुखदेव, राजगुरू के भगिनी,
गोली खाके देश बचावे, ओकर प्यारी हम सजनी,
इहे लालसा के उठेला हिलोर वीरना । छाया.....

भाई – विजय-तिलक लगावऽ, मन के सरधा सब पूजावऽ,
बहिना तनिका आगे आवऽ, अपना भइया के गोहरावऽ
एकता टूटीना ई देशवा के मोर बहिना । सुरुज......

प्रेमोद्गार

–ब्रह्मेश्वरनाथ तिवारी

मुखसे ना बोलब, राज रचिको ना खोलब मित्त !
भूलल अच्छरिया के, रहि-रहि बताई के ?
बाँधि के सनेहिया के, डोरी में हमरा के,
सउँसे रचना के पढ़ि, जन-जन पहुँचाई के ?
नाटक लोकार्पण करि, विज्ञजन बीच धरि,
हमरा प्रसिद्धि के, परचम लहराई के ?
भाई तिवारी जी के, केतना गुणगान करीं,

www.bhojpurisahityangan.com

कइले कल्यान अनेकन, पी. एच. डी. दिलाई के।
श्रद्धा के अँजुरी में, फूल लेके आवत देखलीं,
पूजेले पाँव जेकर, धाई के धधाई के।
डॉ. नन्द किशोर जी के, अनुपम अनुराग जागल,
धन्य भइले संत, शिवानन्द जी के मूर्ति लगाइ के।
तिमाही पत्रिकन से, काव्य के भण्डार भरले,
'प्रत्याभिता' 'इयत्ता' आ, 'सुरसती' माई के।
'हृदय-संदेश' पढ़ीं मन-चित्त लाईं सभे,
अइसन जनाला मुँह भरल मिठाई के।
सारस्वत-साधना में, तन-मन रमाई दिहले,
काव्य सरस-धारा के, सरिता बहाई के।
भास के नाटक चाहे, संस्कृत के जटिल काव्य,
राखि देले भाषा भोजपुरी में, सजाइ के।
संस्मरण 'बतकही' मन के, बहुते गुदगुदावे जब,
आवे लागल सगरे से, पाँती बधाई के।
'सहृदय' जी के लेख हो, या कुंजन के कविता,
छापि दिहले पत्रिका में, जीवन्त बनाई के।
कहले ब्रह्मेश्वर प्रेम भूलब ना मितवा रे,
हृदय जुड़ाइल आजु, सभ कुछ पाई के,
पढ़ीं, पढ़ाईं जा, मन में गुनगुनाईं जा,
का जाने अचके में, कवि बनि जाई के।

–मंगलायन, सहसराम

नवगीत

डॉ. राज कुमार सिंह 'कुमार' विष्णुपुरी

बाट जोहत अँखिया लोर से सना गइल
बदरा बेदरदा पिआसे बढ़ा, गइल
झर–झर लोर झरे भींजे धरतिया
प्रीत हाह मारे नाहीं कवनो जुगुतिया
पालकी में अजब पहुना आ गइल
बदरा बेदरदा पिआसे बढ़ा गइल
सींक अइसन डोले बयार पुरवइया
ममता के मारे रंभाय गोली गइया
पपीहा जीये के आस जगा गइल

बदरा बेदरदा पिआसे बढ़ा गइल
पापी पछुआ अंग–अंग सिहरावे
करेजवा के टूक करे वेदना बढ़ावे
प्यार–पिरितया मन के लोभ गइल
बदरा बेदरदा पिआस बढ़ा गइल
मस्ती फगुनवा के जोर लगावे
कोइलिया जिया में हूक उठा गइल
बदरा बेदरदा पिआस बढ़ा गइल
बाट जोहत अँखियाँ लोर से सना गइल

www.bhojpurisahityangan.com

जगउनी

जाग ऽ ! जाग ऽ !! बीर जवान !
मइया तोहे जगावे आइल बाड़ी
आइल बा देस प बिपत भारी
तूड़ ऽ दुसमन के गुमान !
जाग ऽ! जाग ऽ !! वीर जवान ।
आपन धरती आपन देस
रहे बनल हरा हरमेस
देके जान बचइहऽ एकर शान !
जाग ऽ ! जाग ऽ !! बीर जवान !
देस जब गुलाम हो जाई
का तहार मोल रह जाई ?
कर द क्रांति के आहवान !
जाग ऽ ! जाग ऽ !! बीर जवान !
इतिहास में तूँ अमर हो जइब ऽ
जे तूं देस पर मर-मिट जइबऽ
तोहरे पर देस करी अभिमान ।
जाग ऽ ! जाग ऽ !! बीर जवान !

पगला बसंत

कमलनयन दुबे 'कमल'

जाड़ा गइल ठिठुरा ठठरी
सजधज के सवारी वसंत के आइल
ठंढ रहल ना त घामे अधिक
कमरा-कमरी मुड़तारी धराइल
धरती आ अकास एके रंग में
नएका पलवन से बा फेंड़ सोहाइल
झारि के मस्त बहे पुरुवा
तव मस्ती में हमरो मनवां पगलाइल
(2) खंजन - नयन के पा चितवन
सुखलो मनवां रसवा में नहाइल
चुलबुल देवर के अँखिया
निरखे देहियां अँचरा फहराइल

www.bhojpurisahityangan.com

देहिं जरे जब ताप चढ़े
छुअते बलमा के बोखार छछाइल
टूटत अंग अनंग चढ़े
सुधिया तनवाँ-मनवाँ के भुलाइल
(3) फूलन्हि डोल रहल भंवरा
बगिया-बगिया कोइलर अगराइल
आम के डारि लागे मोजरा
बुढवा महुआ पगला के कोंचाइल
फूल गइल अलसी हुलसी
सरसों पिअरी चुनरी लहराइल
आ गइलन परदेसी 'कमल'
हमरो बलमा अजहूँ नाहीं आइल

–दिनारा, रोहतास

सातिर अपराधी

–जय बहादुर सिंह

माफिया सरगना सत्तार खान पूरा जिला आ आस-पास के इलाका के तबाह क देले रहे। जनता में आतंक मचि गइल रहे। जिला पुलिस के हिम्मत पस्त हो चलल रहे। आई. जी साहेब पूरा सोच समझि के सूबा के सबसे खूंखार पुलिस अधीक्षक के ओकरा जिला में भेजलें। एह नयका अधीक्षक के बहादुरी, सूझ बूझ, कर्त्तव्य पालन आ इमानदारी के बहुते चर्चा रहे। अपराधियन के सजा दिआवे के प्रवृत्ति उनुकर सुभाव रहे, संस्कार रहे। आवते ऊ मन में संकल्प कइले कि एक साल के अन्दर पूरा जिला के अपराधी विहीन क देबि जा सत्तार के पकड़ि के सजा दिलवाइबि ना त नोकरी से इस्तिफा दे देबि।

अभियान चलल। अपराधियन के पकड़-धकड़ शुरु भइल। अपराधियन के पकड़े में ऊ अपना जान के परवाह कबो ना करसु। बहादुरी पूर्वक अपनहुं जिला पुलिस के साथ सामना करसु। एसे जिला पुलिस के मनोबल बढ़ि गइल। जिला में अपराधिन के संख्या घटे लागल। अब पुलिस ओह लोग खातिर आतंक हो गइल। बहुत लोग जेल गइल, कुछ इनकाउन्टर में मरइले आ कुछ बगल के जिला आ राज्य में भागि गइले। बहुते त पड़ोसी देश नेपाल में हेलि गइले जवना खातिर पासोपोर्ट ना चाहीं। शहर में पूरा अमन चैन हो गइल। केहू के मंन में असुरक्षा के भय ना रहि गइल रहे।

साल त बीति गइल। बाकी, सत्तार ना त पकड़ाइल आ ना मराइल। अधीक्षक जी

www.bhojpurisahityangan.com

अपना संकल्प के मोताबिक इस्तिफा दे दिहले। बाकी उनुका इस्तीफा के ऊपर वाला कवनो अधिकारी अनुसंसा ना कइले आ नाहिये केहू स्वीकार कइल। उनुकर बॉस लोग ना चाहत रहे कि अइसन काबिल अधिकारी से हाथ धो दिआव। अन्त में हारि के विभागीय प्रभारी मंत्री जी किंहा आपन दरखास लेके गइले आ स्वीकार करे के अनुरोध कइले।

मंत्री जी बड़ा आदर भाव से, बइठवले आ आवेदन पत्र पढ़ि के मधुर आवाज में बोलले, काहे रउआ अतना परेशान बानी। रउआ लेखा हीरा आफिसर के हम प्रांत से बाहर ना जाये देबि। सत्तार त रउआ गोड़ के धोअनो के बराबर नइखे। अभी हम ओकरा के रउआ गोड़ प गिरवावत बानी।

थोरही देर में मंत्री जी ओकरा के बोलवा के हाजिर क दिहलीं आ बोललीं "सत्तार हेने आके हजूर से पहिले के केसन में गिर के माफी मांग आ कहऽ हम अब अपराध ना करब हमराबांचे के कवनो रास्ता निकाल दी। हम राउर कहल करबि आ मंत्री जी के पार्टी में सामिल होके जिनिगी भर समाज सेवा करबि।"

पुलिस अधीक्षक मंत्री जी के नाटक देखि के आवाक रहि गइले। सोचले जहां के नेता लोग के ई चरित्र बा ऊ राज्य कबो अपराध बिहीन ना हो सके।

आ ऊ केन्द्रीय गृहमंत्री से आपन फरियाद करे खातिर चल दिहले।

–साहित्य परिषद्, जमशेदपुर

◆ ◆ ◆

आदरणीय तिवारी जी,
प्रणाम

अपने द्वारा प्रकासित 'सुरसती' (भोजपुरी पत्रिका) के विज्ञापन भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका में देखे के मिलल। आजकल पत्रिका निकालल केतना कठिन बा आ ऊहो भोजपुरी में ई सर्वविदित बा। अपने एह में चल रहल बानी, बड़ा जीवट के बात बा।

पत्रिका अबहीं देखे के ना मिलल। बाकिर अनुमान बा कि निकलल होई त जरूरे राउर विद्वत्ता आ कर्मठता के छाप लेले होई। पत्रिका के शुभकामना के साथ रचना भेज रहल बानीं। 'सुरसती' में रचना स्थान पा सकल त हमार प्रयास सार्थक बुझाई।

राउरे
राज कुमार सिंह
विष्णुपुरा (गुलटेन गंज)

www.bhojpurisahityangan.com

समीक्षा

गीत लोक – राम जीवन दास बावला
सेवक प्रकाशन, ईश्वरगंगी, वाराणसी

ई कविता के किताब 97 में छपल रहे। पचहत्तर वरिस के पार करेके बेरी बावला जी के कुल्ही कविता एक जगहा पर कके प्रकाशित भइल। गाँव गँवई के मनई आपन कविता के जवन झूठ-फुसार तुकबंदी समझत रहन ओकरा प विद्यानिवास मिश्र जी जइसन दीगज विद्वान कवि आउर मान्य प्रोफेसर के भूमिका ओकर शोभा बढ़वलस, उनुकर कविता मिश्र जी के सुखद अचरज में डाल देलस। कहेके पड़ल कि भोजपुरी खाली हिन्दी के उतरन ना ह बलुक ओकर आपन अलग अस्मिता भी बा।

बावला जी के ई किताब करीबन दू सै पृष्ठ के दू खण्ड में बा। एगो खण्ड में भक्तिपरक गीत बाड़सन। सुरसती, गुरु, शिव के चरित्र एह में आइल बा। रामचरित करीबन सै पृष्ठ में गइल बा। एह में भरत चरित, शबरी प्रसंग, कोशिला के विरह सभ प्रसंगन पर बावला जी आपन मार्मिक गीत लिखले बाड़े। एही प्रसंग में आपना जात के देवता विश्वकर्मा भगवान के प्रति भी आपन निवेदन समर्पित कइले बाड़न। दोसरका खण्ड युगबोध प आधारित बा। एकरा में अनेक प्रकार के विषय पर बावला जी आपन भाव परगट कइले बाड़े। एह में राष्ट्रीय गीत गाँव-गिराँव, दहेज, कन्या के विदाई, परिवार नियोजन, सूखा, विसूत्री कार्यक्रम, भ्रष्टाचार कुल्ही पर ऊँहा के विवेचन पढ़े लायक बा। अंतिम कविता ह जनतंत्र चालीसा। एह में ऊहाँ के व्यंग्य परवान चढ़ल बा। 'जय वकील जय जय चपरासी, पेशी बिना होई गई फाँसी। जय दलाल विचवलिया भाई, राम न सकहिं तोर गुन गाई। जय बाजार जय जय महँगाई। सत्तर रोग बहत्तर बाई।'

एह तरह से पूरा जनतंत्र चालीसा में देस के स्थिति ओकरा वर्तमान के कुल्ही कोना में झाँकता पुलिस भ्रष्टाचार पर बावला जी लिखताड़न

देश-विदेश प केना थूकल, कहँवा नावँ बिकाइल नाहीं
तबो पुलिस लजाइल नाहीं।

महँगाई में किसान के स्थिति के दर्शावे में कवि के कतना साफ नजरिया बा ।

अगहन केतना करी सहइया हो
महँगइया अइसन बा ।
चावल बनके राजा बइठल
दाल रहर के रानी
इनकर दरसन महँगा होइगा
गेहूँ करे दिवानी ।
रोवें चारों ओर रुपइया हो
महँगइया अइसन बा ।

कुल मिला के कवि के भाषा पर अधिकार, अचरज में डाले वाला बा। हर [illegible] अपना में पूर्ण बा। ई कविता के किताब भोजपुरी भासा के सिंगार बा। एकर छपाई [illegible] भी बहुते ठीक भोजपुरी में प्रकासित किताबन से अलगा बा। एकर गीत कुल्ही गावे लायक लोक धुनि पर आधारित बा। कवि एह किताब खातिर पूरा भोजपुरी समाज के बधाई के पात्र बाड़न।

– [illegible]

www.bhojpurisahityangan.com

सुपुली भर तरेगन

सम्पादक –गंगा प्रसाद अरूण
भोजपुरी साहित्य परिषद
जमशेदपुर, बिरसा नगर।

जमशेदपुर के भोजपुरी परिषद के स्वर्ण जयंती बरिस पर प्रकाशित पन्द्रह गो कवियन के पँच-पँच गो कविता बानगी के तौर प एह पुस्तक में संकलित बा। ई सभ कवि पाकल विचार वाला विवेकी पुरुष बाड़न। ऊ अपना कविता से छाँटल फटकल बनावल कविता के नमूना एह में पेश कइले बाड़न। अरूण जी के सम्पादकीय आउर चन्द्रभूषणजी के भूमिका सभ कवियन के कथ्य के सारांश प्रस्तुत करत बा। अरूण जी अपने एगो समरथ कवि हवन। सुपुली भर तरेगन के शीर्षक जोह के ऊ बहुत बड़ बात कहले बाड़न। ई जइसे सम्पादक खातिर खेलवाड़ होखे। तरेगन के स्थान आकाश ह। आकाश असीमित होला ओकर कवनो सीमा नइखे। तरेगन भी अनगिनित होलन। गिना न सकस। अइसना में सूप के बदला में सुपुली कह के असीम साहित्य के ससीम बनाके आपन सामर्थ्य के बड़ा बढ़िआँ लेखा-जोखा एह संकलन में कइल गइल बा। एह में भाव समुद्र के साथे रचना के विविधता भी सामने रखल गइलबा। एक ओरे जमशेदपुर के कुल्ही साहित्यकार आ एक ओरे के पन्द्रह गो साहित्यकार के रचना सारा शहर के प्रतिनिधित्व ना कर सके एहसे सुपुली के प्रयोगे बहुते सार्थक बा। एह में कुल तरेगन के अँटाव नइखे जतना आँटल बा ओकरा के समने परोसल बा। साँचो कवनो संकलन कुल्ह मिलाके स्थालीपुलाकन्याय से सुपुली भर, बनिए जाला। हिन्दी के क्षेत्र में भोजपुरी के तरेगन चाहे साहित्यकारन के रचना सुपुलिए भर कहल जा सकेला। एह तरह से ई काव्य संकलन बहुते महत्वपूर्ण बा एकर कागज साज-सज्जा, छपाई बहुते उत्तम बा। एकर सम्पादक सच्चा माने में बधाई के पात्र बाड़न।

– नकिति

कायाकल्प

लेखक – गणेश दत्त किरण

गणेश दत्त किरण के ई उपन्यास एक तरह से पुरानन के एगो विश्वकोश लेखा बा। किरन जी भोजपुरी के एगो बड़ कवि त हइए हँईं उपन्यासो लेखक हँईं। 'इहाँ के लिखल भोजपुरी भाषा के पहिलका आत्मकथात्मक उपन्यास ह-रावन उवाच। एह में रछ संस्कृति के विस्तार से बरनन कइल गइल बा जेकर मुखिया रावन हवन। रावन आपना बारे में अइसन वरिआर तरक दे ताड़न कि पढ़े वाला कवो इन्द्रिका के अनाचारी आ उदण्ड ना कह सके।

'कायाकल्प' किरन जी के पौराणिक ज्ञान के प्रमाण देवे वाला उपन्यास ह। एकर कथ्य अतना सुलझल आ रहस्य से भरल बा कि एक वेरी किताव के हाथ में लेला के बाद रखेके के मन ना करी। कायाकल्प मे किरन जी ई दिखलावल चाहताड़न कि बलात्कार के समस्या आज के ना ह पुरान काल से ई चलल आ रहल बा। आचार्य बृहस्पति अपना तपस्या से मन, प्राण से पवित्र हो गइल रहन। ऊ जानत रहन कि हमार पत्नी तारा हमरे शिष्य सोम के साथे जारकर्म कइले बाड़ी लेकिन तबो ऊ उनका के अपनाले ताड़न। अतने ना अपना भाई उतथ्य के पत्नी ममता के साथे बलात्कार कर बइठताड़न। उनकर लइका उतथ्य यद्यपि अवहिन किशोर बाड़न लेकिन गुरुपुत्री देवयानी के प्रणय प्रस्ताव के ठुकरा

www.bhojpurisahityangan.com

देताड़न। उतथ्य अवहिन पूरा संस्कारिक नइखन तवो बहुत संयमी बाड़न लेकिन बृहस्पति अपना कठोर तपस्या के चिन्ता न कइके बलात्कार कइके अपना चरित्र के कलंकित कर लेत बाड़न।

एह बलात्कार के पाप से नहुष सरग से साँप होके पृथ्वी पर गिर जाताड़न। उनका सप्तर्षि लोग के सराप झेले के परत बा। लेकिन बाप के कुकर्म से उनकर बेटा जजाति कवनो शिक्षा ग्रहण नइखन करत। लागत बा कि इतिहास जइसे शिक्षा लेबे के चीझे ना होखे। ऊ वासना के पंक में धसत चल जा ताड़न, जेह के चलते, उन्हुका अपना ससुर शुक्राचार्य के कठोर शाप झेले के परत बा। तवो ऊ अपना चरित्र में सुधार नइखन कर पावत। भोग खातिर अपना लइकन से जवानी माँगत बाड़न। तवो लइका इन्हिका के जवानी नइखन सन देत। अन्त में दासी के पुत्र शर्मिष्ठा के पुत्र जवानी देत बाड़े। बाद में जजाति के कामोपभोग से घिरना हो जाता आ ऊ फिर तपेसवा में लीन हो जा ताड़न। फेरू ऊ अपना तपेसवा से सरग जा ताड़न लेकिन इनका मन के अहंकार अवहिनो कम नइखे होत ऊ अपने प्रशंसा अपने मुँहे इन्द्र से करताड़न। आ एकरा के सुनके इन्द्र इन्हिका के सरग से निकाल बाहर कर ताड़न। तब जजाति रिसियन के समूह में जाके सतज्ञान प्राप्त करताड़न। अब कहीं जा के इन्हि का फेरू सरग मिलतबा आ ऋषि लोग इनकर प्रशंसा करताड़न।

एह किताब के भाषा बड़ा प्रवाहपूर्ण आ प्रांजल बा। जगह-जगह पर किरन जी के मुहावरादानी देखे योग बा। कायाकल्प एकर नावँ ही बड़ा उपयुक्त बा। कबो राष्ट्र के सेवा करे खातिर महामना मालवीय जी आपन कायाकल्प करेके उतजोग कइले रहीं। एह जजाति राजा के कथा रामचरितमानसो में आइल बा लेकिन ओहिजा उदाहरण रूप में बा एह उपन्यास के मुख्य उद्देश्य ई बा कि स्त्री-पुरुष के समस्या आ मान-सम्मान लेके एह संसार के कुल्ही अदिमी जजाति अइसन तपस्वी भी, इन्द्र अइसन बली भी एकरा से अलगा न रह सकलन। किरन जी के अनुसार बलात्कार अइसन कुछ समस्या आजुए के ना ह। पहिलहूँ अइसन घटना समाज में होत रहे। **– नकिति**

सपना के देस

रचनाकार – सिपाही पाण्डेय 'मनमौजी'

एह कृति के रचयिता कवि मनमौजी पूरा हिन्दी प्रदेश में अपना भोजपुरी आ हिन्दी के गीतन खातिर मशहूर बाड़न। एह किताब के देखला से कवि के कविकर्म के उमिर के बखूबी पता चल जाता। करीबन चार दशक से इहाँ के गीत लिखत आ सुनावत, सभा के हरखावत आउर मान-सम्मान पावत बानी। सबसे बड़ बात ई बा कि इहाँ के बिहार से बहरी हिन्दी के गढ़ में जाके भोजपुरी के साका फहरवले बानीं। एह कृति के सम्पादन ऊहाँ के सुपुत्र रासबिहारी जी कइले बाड़न। आउर ई किताब बम्बई जवन हिन्दी प्रदेश भी ना ह ओहिजा से प्रकाशित, भइल बा। सम्पादन करेके जरूरत एह से परल कि एह में चालिसन बरिस से लिखल कविता जवना में से कुछ पत्र पत्रिकन में निकलल रहे ऊ सभन के एक जगहा संगोरे के भी रहे। ई काम एह उमिर में साइत कवि करे में अपना आलस के प्रमाण अतना दिन से देत चलल जात रहन। चूँकि रासबिहारी जी अपने एगो नीमन गीतकार हवन उनका से ई देखल ना गइल। अगर ई गीत संगृहित ना भइल रहित त भोजपुरी मरद एकरा के उड़ा के अपना नावँ के मोहर ओह पर, लगा देतन। अइसने कबो कुंजन आ शाहाबादी के गीतन के साथे भइल रहे। एह से रास बिहारी एह संग्रह द्वारा भोजपुरी

www.bhojpurisahityangan.com

समाज के, आपन आभारी अपने बना लेलन। मनमौजी के कविता के प्रशंसा केहू का करी। खड़ी बोली हिन्दी के निर्माण में सहयोग देवे वाला प्रखर गीतकार सुमित्रानन्दन पंत जी अल्मोड़ा के रहीं ऊहाँ के भाषा पहाड़ी बोली रहे, लेकिन ई भोजपुरी के सौभाग्य बा कि इहाँ के गीतन के सुनि के मुग्ध होके अपना जीवन काल में ऊहाँ के दू शब्द लिखहीं के परल। एह कृति खातिर ओह दू शब्द के ऐतिहासिक भूमिका शिलालेख नीअन मानल जाई। करीबन एह में 80-85 गो गीत संकलित बा। सम्पादक एकरा के चार-पाँच गो भाग कइके बन्हले बाड़े। यद्यपि कविता के मर्म के कवनो भाग चाहे खँड़ती में खाँच के सीमा बन्द ना कइल जा सके। अइसहूँ मनमौजी कवि गीतकार आ मुक्तककार कवि हवन। मुक्तक कवि एगो क्षण के पूरा जीवन देके जीवन्त कर देला लेकिन प्रकृति और विषय के प्रधानता के आधार पर एकरा के चार-पाँच गो कोटि में निधारित कइल जरूरी रहे। पहिलका कोटि में भक्ति गीत, दोसर में प्रकृति गीत तिसरका में फसल गीत आ चऊथका में जिनगी के गीत। भगति गीत में सुरसति, जखनी भवानी, मुण्डेश्वरी माई, हरसू ब्रह्म, काशी नगरी, छठ पर गीतन के बाद कुल्हीं गीत श्रीकृष्ण के कन्हइया रूप से सम्बन्धित था। मनमौजी कवि आँख रहलो प भोजपुरी के सूरदास हवन। श्रीकृष्ण के रूप गोकुला-मथुरा के स्वरूप कैमूरो में रहला प छनभर खातिर भुलास ना। ई ओह गीतन के खाली रचले नइखन, ओह गीतन में बसल बाड़न आउर कन्हइया के रूप ओह में बसा देले बाड़न। ओही माध्यम से ग्वालिन, बंशी, सावन, बादर सभ कुछ एगो गीत में उनका, कलम प गोवर्धन नियन खड़ा हो गइल बा। जहवाँ हरियाली भी, गाय भी बाड़िसन आ सभका नीचे जइसे भगवान कृष्ण अपना बालरूप में सभका के अपना सिर पर उठवले बाड़न।

मनमौजी गाँव गँवई के अदिमी हवन उनकरा घर के सिरहाना उनका कल्पना के मन लेखा ऊँचा पहाड़ बा आ गोड़तारी नदी के उमगत प्रवाह। एह से ऊ मधुरी बयार आउर बसंती खेती में धरती के कुल्ही परिवर्तन के दृश्य अपना भीतर आ बाहर अपना दूनों आँख से देखले बाड़न। फसल गीत में ऊ भोगले जीवन बा जवन एगो किसान के हालत के बेआन कर रहलवा जइसे निलहा खेतिहरन के दुर्दशा के बेआन सुनके गाँधीजी देस के सुराज दिवआवे खातिर कमर कस लेले रहीं। 'किसान के कहानी' में ऊ एगो जिअत तस्वीरे नाहीं एगो अलबम तइयार हो गइल बा। देस गीत से सम्बन्धित सैकड़न गीत लिख के सम्मेलन में जवन कवि वाहवाही लुटले बा ओकर, लिखित रूप सपना के देस में प्रत्यक्ष भइल बा। जिनगी के गीत में श्रृंगार, वीर आउर करूना आऊर कुल्ही रस प्रधान हो गइल बा। कुँआर बेटी के हाल सुनिके के बा जे बरफ के नदी ना हो जाई। एह तरह से सपना के देस जइसन एह संकलन के नावँ बा विविध रंग से भरल एगो फुलवारी के समान बा, जवना में अलग-अलग रंग, अलग-अलग सुगंध आउर अलग-अलग संवेदना अलग-अलग भाव के परगट करे में समर्थ बा। भोजपुरी भाषा में पहिलका बार अतना बढ़ियाँ साफ-सुथरा, साज-सज्जा, निर्दोष मुद्रण आउर भाव भरल अनेक रंगी गुलदस्ता सामने आइल बा। भोजपुरी भाषा एह पुस्तक प गुमान कर सकेले। एह से रचयिता आ सम्पादक दूनो धन्यवाद के योग बाड़न।

—नकिति

www.bhojpurisahityangan.com

सेवा आ समेलन

सेता अब त सबदे में समा गइल। सबद में समाइल चीझ करम में परगट हो ना सके। सबद के अरथ ह–स–बद। ओतने बोलऽ जतना कर सकेलऽ। बोलल आ कइल एक चीझ ना ह दू चीझ ह। मुरूख खातिर बोलल आ आपन बड़वरगी भर ओकर पूँजी होला। सेवा करे के ह कहे के ना। ओकर कुल्ही सत कहते निकल जाला। एने पूरा देस में सेवा करे वाली संस्थन के भरमार हो गइल बा। ओकरे ओरे सेवक लोग के मान प्रतिष्ठा पइसा, के संजोग जुट रहल बा। एने देखत बानी कवि सम्मेलन आ जयन्ती राजनीति करे के एगो मंच हो गइल बा। ई जमायत राजनीतियन आ प्रसासन के सेतु ह। एकर संचालक लोग के आपुसी गुर ह तू हमरा के राजा कहिहऽ हम तोहरा के कहब समराट। सम्मेलन पहिले होत रहे। ओह में भासा–साहित्य के विकास के बड़ा कड़ुआ लेखा–जोखा होत रहे। के कइसन लिख रहल बा। केकरा में कतना जोस था। का करे के चाही एकरा विकास खातिर। के कवना विद्या में माहिर बा। केकरा कवना साधन के अभाव बा। हमनी के आपुस में परेम से संस्था के बढ़ाईं। हमनी के रचनन में राष्ट्रजीवन के सरूप कतना उभर के आवत बा। पूरा जीवन अपना संपूर्णता में कतना हद तक परगट होके आ सकल बा। आजु ई समेलन एगो गुट चाहें दल के आक्रामक आतंकवादी सरूप हो गइल बा। आतंक कायम कइल एकर लक्ष्य बा सेवा ना। सेवा के नाँव पर चादर रोपेआ, अखबार में नावँ छपवा के बाहबाही लूटल आ साँचो के कविअन के मान–मरदन एकर साध्य बन गइल बा। दोसरा के रचनन के पढ़िके, कवि बनिके मंच पर घोर निर्लज्जता के तांडव हो रहल बा। एह में नातऽ कोई श्रोता जाता आउर न कविता के पारखी। जाके के आपन समय के बेंचे जाय, जवन जीवन के महान–धन ह। कविता के ओरे घिरिना पैदा करे में ओकर सरूप के घिरनित बनावे में अइसन दल बड़ा जोर–सोर से लागल बा। कलिजुग में अइसने हावा चली गोसाईं जी बहुत पहिले एकर हवाला देले रहीं। अंग्रेजन के राजकाल में एकरा के लोग ठाठा समुझत रहे। उहाँ के कहले रहीं कि ओह घरी कुल दोस गुण मानल जाई। जमाना, उलटि जाई। 'जे कोई झूठ मसखरी जाना कलिजुग सोइ गुनवंत बखाना।' पहिले बनारस के भाँड़ लोग के बड़ा नाँव रहे। कवि लोग ओहिजा के भाँड़न के आचरन के कबि सम्मेलन में उतार दीहल। पइसा कमाए के समेलन साधन बनल। ओही तरह के पूरा दल आपुस में बहुते निचिला दरजा के गारी–गलौज मंचे पर तुकबन्दी के साथे करे। संवाद चले कौवाली जस। कवनो कवि के पास एगो रचना होखे के चाही, बस ओकरे के सगरो रटावत रहीं। आय के सभसे आछा स्रोत बनल कवि–समेलन। साहित्य के सरिता ओही घरी से सूखे लगली। ओह में नाला के पानी भर गइल। लोगन के कवि आ साहित्य सेवा के अरथ ऊहे लोग जे कहल कविता के पहचान बन गइल। सुरसती बिना आगी काठी जरिके अइसहीं ना धरती के भीतर चल गइली। कवियन के नावँ सुनिके, कुपात्रन के कावँ–कावँ सुनिके, आउर अस सूने सुनावे वाला के गावँ सुनिके। एहिजा के साहित्य, भासा आ संस्कृति के भगवानो ना बँचा सकस।

– नकिति

www.bhojpurisahityangan.com

अपना मातृभासा के जर पहचानीं
संस्कृति, राष्ट्रभासा आ राष्ट्र के हेतू जानीं

माई लइका प एगो सब्द के हरमेसा प्रयोग करी ऊ रहे अल ? का अल कइले बाड़ऽ। देखत बानीं·मनते नइखे, अल कइले बा। बिना डँटले ई आपन अल ना छोड़ी। अल करे वाला वरबरे पछताला, बबुआ मान जा। एकर अरथ त समुझ में कुछ आवत रहे लेकिन ई निकलल कहाँ से ई एने बुझाइल ह। भोजपुरी भाई लोग आपन बाप–दादा, आजी–माई के बातिन पर धेआन देस त एगो अलगा कोस ग्रंथ बनि जाई। एगो सब्द के अरथ जाने में बीस बरिस लागि जाला। त ई अल सब्द संसकिरित के 'अल्' से निकलल बा। एही के अवधी चाहें ब्रजी में आरि लोग कहले बा। 'कबहूँ – ससि माँगत आरि करैं कबहूँ प्रतिबिंब निहारि डरैं। (तुलसी) ई सब्द लइकन के कवनो चीझ लेबे खातिर जवन जिद चाहें हठ होला ओकरे खातिर आइल बा। अइसे हठ के प्रयोग भी गोसाईं जी खूबी कइले बानीं – हठ बस सब संकट सहे। अब भोजपुरी में एकर तेवर देखीं। आरे ई अइसन अल कइले बा कि बिना लेले मानी ना। ई बड़का जोर के अली ह। एकरा अल के समने देवतो झुक जइहें। अइसन अल त सुनलहीं ना रहीं। आरे ई अल अइसन अल बा ? के बा जे एकरा के पूरा करी। ई बड़का अलइठ ह । अपना अल में अलमस्त बा। अइसने एकर आउर बहुते तरह से प्रयोग होला, हो सकेला।

एने होली के दिन, मारीच के महीना, सोना के मिरिग ई सउसे मासे ह। संसकिरित के विदवान कबि लेखक देवकुमार मिसिर 'अलमस्त' एही अधारे आपन जीवनी मत लिख देस, डर लागत बा। भाई जी छेमाकरीं राउर उपनाम बड़ा नीमन बा। अब कारन बताईं रउआ अलमस्त कहलीं कि कहइलीं ? आ कहइलीं त एकर अरथ के काहे ना समुझलीं। समुझतीं त नावँ में ना लगइतीं।

– नकिति

मुद्रक : अंकित प्रेस, के. 16/44 बीबीहटिया, भैरोनाथ, वाराणसी – 1
फोन नं0 : 0542 - 2437253 – मोबाइल : 9935956134